ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25 | दिसम्बर - II - 2023 | अंक - 18 | माउण्ट आबू | Rs.-12

संयुक्त प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी का हर्षोल्लास से मनाया अमृत महोत्सव, लौकिक परिवार भी हुआ शामिल

शक्ति स्वरूपा नारी की अद्‌भुत मिसाल राजयोगिनी मुन्नी दीदी

75 साल तक मानवता की सेवा में जीवन लगाना महान पुण्य - दादी

शांतिवन-डायमण्ड हॉल। जिस मनुष्य का जीवन केवल अपने लिए होता है वह केवल अपने तक ही सीमित होता है। परन्तु जो व्यक्ति दूसरों के लिए

सोचता और करता है उसका जीवन धन्य हो जाता है। वह मनुष्य नहीं बल्कि देवता के रूप में स्मरणीय होता है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका 99 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी ने संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी के अमृत महोत्सव में व्यक्त किये। दादी ने कहा कि मुन्नी बहन द्वारा अपना जीवन 75 सालों तक मानव सेवा में लगाना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। कार्यक्रम में संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी तथा ब्र.कु. जयंती दीदी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि नारी समाज के रूप को बदल सकती है। नारी अपने स्वरूप को पहचान ले तो उसका जीवन शक्ति स्वरूप हो जाता है। संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई ने कहा कि सभी माताओं-बहनों को मुन्नी बहन के दैवी गुणों और कुशल प्रबंधन से प्रेरणाएं मिलती हैं। इतने सुंदर तरीके से जीवन में मूल्यों को उतारना और दूसरों के लिए फिक्रमंद रहना दिव्य आत्मा का ही कार्य है। अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने मुन्नी दीदी के कुशल प्रबंधन की तारीफ करते हुए कहा कि यदि नारी शक्ति का रूप धारण कर ले तो पूरा समाज बदल सकता है। इस मौके पर संयुक्त मुख्य

अपने जीवन के 75 साल पर अपना वक्तव्य देते हुए संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने कहा कि मेरा जीवन सफल हो गया। मुझे प्रातः काल से रात तक परमात्मा की सेवा में व्यस्त रहना सबसे बड़ा पुण्य लगता है। मैं तो सबसे यही कहना चाहती हूँ कि यदि हम अपना जीवन परमात्मा को समर्पित कर दें तो हमारे बारे में परमात्मा सोचता है।

प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, ब्र.कु. शशि दीदी, ब्र.कु. सुदेश दीदी, मल्टीमीडिया चीफ ब्र.कु. करुणा भाई, कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय, डॉ. पताप मिड्ढा, ब्र.कु. श्रीनिवास, ब्र.कु. देव, ब्र.कु. प्रकाश समेत कई लोगों ने अपने विचार रखे। अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में रैली का भी आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में संस्थान के सदस्य शामिल हुए। मुन्नी दीदी का लौकिक परिवार भी इस महोत्सव में शरीक हुआ। देश के कई हिस्सों से आये कलाकारों ने अपनी दिव्य प्रस्तुतियों से सारी सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कुशल प्रबंधन की प्रेरणास्रोत, सभी के लिए फिक्रमंद, सदा परमात्मा के कार्य में समर्पित, सभी को श्रेष्ठ पालना देने के निमित्त, अपना हर क्षण-हर पल ईश्वरीय सेवाओं में सफल करने वाली संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मुन्नी दीदी को उनके 75वें जन्मदिन की ढ़ेरों शुभकामनायें व आपके सुस्वास्थ्य व दीर्घायु की मंगलकामनायें।

लंदन में 'इंडो यूके लीडरशिप सम्मिट' को ब्र.कु. डॉ. गंगाधर और ब्र.कु. अरुणा लाडवा ने किया सम्बोधित

लंदन। इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर,लंदन, भारत का नंबर 1 न्यूज़ चैनल 'आज तक' तथा 'इंडिया टुडे' ग्रुप द्वारा लंदन के कोर्ट हाउस होटल में आयोजित 'इंडो यूके लीडरशिप सम्मिट' में माउण्ट आबू से आये ओमशान्ति मीडिया पत्रिका के संपादक ब्र.कु. डॉ. गंगाधर ने 'वैल्यू बेस्ड जर्नलिज़्म' विषय पर सम्बोधित करते हुए कहा कि पत्रकारिता की पवित्रता को बनाये रखना आज बड़ी चुनौती है। 'मीडिया' समाज में घट रही घटनाओं को प्रकाशित करना ही नहीं किंतु समाज को सही दिशा देकर लोगों के जीवन को बेहतर बनाना भी है। उन्होंने आगे कहा कि मूल्य आधारित पत्रकारिता से ही हम समाज को भी मूल्य दे सकेंगे। पहले पत्रकारिता व्यक्तिगत मूल्य के आधार पर थी किंतु आज कहीं न कहीं

स्वार्थ के जर्म्स ने मीडिया की भूमिका पर सवाल खड़े कर दिये हैं। आवश्यकता है हमें मूल्यों को अपने जीवन में उतारकर फिर से पत्रकारिता के मूल उद्देश्य को साकार करने की। ऑक्सफोर्ड के ग्लोबल रिट्रीट सेंटर की डायरेक्टर ब्र.कु. अरुणा लाडवा ने 'वैल्यूज़ एम्पावर्ड लीडरशिप' विषय पर कहा कि स्वयं को सशक्त करने के लिए मेडिटेशन को अपने जीवन का हिस्सा बनाना सबसे उत्तम साधन है। नियमित मेडिटेशन करने से व्यक्ति में शांति, सद्भावना, समरसता जैसे गुण आते हैं और वो समाज में भी वैसा ही वातावरण पैदा करता है। उन्होंने सभी को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराते हुए गहन शांति की अनुभूति कराई।

हाउस ऑफ लॉर्ड्स,ब्रिटिश पार्लियामेंट में दिया ईश्वरीय संदेश

इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर,लंदन, भारत के नंबर 1 न्यूज़ चैनल 'आज तक' तथा 'इंडिया टुडे' ग्रुप द्वारा हाउस ऑफ लॉर्ड्स, ब्रिटिश पार्लियामेंट,लंदन में आयोजित 'इंडो यूके लीडरशिप सम्मिट' एवं 'अवॉर्ड्स समारोह' में दुनिया भर से अलग-अलग क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले व्यक्तियों को 'इंटरनेशनल एक्सीलेंस अवॉर्ड 2023' से सम्मानित किया गया। इसी के तहत 180 वर्ल्ड रिकॉर्ड करने वाले पहले भारतीय ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके को देश-विदेश में राजयोग का प्रचार-प्रसार करने के लिए सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री मनीषा कोईराला के हाथों 'इंटरनेशनल एक्सीलेंस अवॉर्ड 2023' से सम्मानित किया गया। इस मौके पर इंटरनेशनल बुक ऑफ ऑनर के चेयरमैन डॉ. दिवाकर सुकूल, इंटरनेशनल बुक ऑफ

ऑनर के प्रेज़िडेंट जॉन रेनफोर्ड, बरोनेस डॉ. संदीप वर्मा, लंदन के सिग्नेचर ग्रुप ऑफ होटल्स के संस्थापक प्रसिद्ध उद्योजक रमेश अरोरा आदि उपस्थित रहे। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सभी को ईश्वरीय संदेश भी दिया गया। हाउस ऑफ लॉर्ड्स में ब्रह्माकुमारीज़ के सदस्यों ने अभिनेत्री मनीषा कोईराला तथा आज तक न्यूज़ चैनल की विदेश मामले के संवाददाता गीता मोहन से मुलाकात की तथा उन्हें ईश्वरीय संदेश व ईश्वरीय सौगात देने के साथ ही संस्थान के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का विशेष निमंत्रण भी दिया।

सोच को साध लिया तो खुशी मिल ही जायेगी

हमारी बहुत सारी समस्याएं और चिंताएं हमारी बेकार की सोच से उत्पन्न होती है। सोच को अगर साध लिया तो जीवन में खुशी, शांति और प्रेम की कमी नहीं रहेगी।

शब्दों के अर्थ को समझें

हमारे विचार ही नहीं बल्कि हमारी सोच ही हमारे तमाम समस्याओं के मूल में है। इस अंतर को समझना ज़रूरी है। सामान्यतः थॉट्स और थिंकिंग यानी विचार और सोच को एक ही समझ लिया जाता है, जबकि ऐसा है नहीं। विचार यानी कि हमारा एक तरह से मत है, अभिप्राय है, कन्क्ल्यूज़िव अप्रोच है। जबकि सोच, ये हमारे मन-मस्तिष्क में निरंतर चलती रहती है। अगर उसपर लगाम नहीं तो फिर वो सोच हमारी आदत बन जाती है। यह अच्छी भी हो सकती और बुरी भी। ऐसा ही अंतर पेन(कष्ट) और सफरिंग(पीड़ा) के बीच में भी है। हमें इन सूक्ष्म अंतरों को समझना होगा।

नकारात्मकता की जड़

विचार संज्ञा है और सोचना क्रिया। संज्ञा होती है लेकिन क्रियाओं का नियंत्रण हमारे हाथों में है। ये हम ही हैं जो किन्हीं विचारों में अपने समय, ऊर्जा और निष्ठा का निवेश करते हैं। जब भी आप नकारात्मकता का अनुभव करें, सचेत होकर देखें, आप पायेंगे कि ये आपकी सोच का ही परिणाम है। इस बारे में जागृत होना बहुत ज़रूरी है।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

प्रतिक्रिया देना हमारे हाथ में

जीवन है तो कष्ट तो होगा ही। लेकिन पीड़ा का होना, न होना हमारे हाथ में है। परिस्थितियां कभी भी पूरी तरह से हमारे नियंत्रण में नहीं होती हैं। लेकिन परिस्थितियों पर कैसे प्रतिक्रिया देना है और उन्हें कैसे हैंडल करना है, यह अंततः हमारे ही हाथ में है। एक बार हम इस बात को समझ जायें तो तमाम तरह की परिस्थितियों के लिए अपने को अनुकूल बना सकते हैं।

खुद से पूछते रहें सवाल

अपने आप से निरंतर प्रश्न पूछते रहें कि क्यों? आप जो भी करते हैं, वो क्यों करते हैं? पैसा कमाने के लिए? पैसा आप क्यों कमाना चाहते हैं? यात्रा करने के लिए? यात्राओं का क्या प्रयोजन है? नये-नये लोगों से मिलना और अनुभव अर्जित करना, लेकिन क्यों? क्योंकि इससे खुशी मिलेगी। इस विचार प्रक्रिया को अपनायें। आप करके देखें। आप एक दिन इसे ज़रूर करके देखें और अपना अनुभव स्वयं से साझा करें।

क्या आपको खुशी मिली?

आप जो कुछ भी करते हैं, उसका प्रयोजन यही है कि आपको खुशी, प्यार और शांति मिले। तब सवाल उठता है कि जब सारा उद्यम कुल मिलाकर इन्हीं चीज़ों के लिए है तो आप इनकी खोज सामान्य जीवन की छोटी-छोटी बातों में क्यों नहीं करते? उससे भी बड़ा प्रश्न यह है कि आप जीवन में जो कर रहे हैं उससे ये आपको मिल रही है? इसका मतलब कि जो हम चाहते हैं वो हमारे हाथ में है। तो हम इसे रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में शामिल करें।

प्रेम क्या है इसे समझें

खुशी और शांति तो समझ में आती है, प्रेम को समझना ज़रूर थोड़ा कठिन है। प्रेम को सीमाओं, शर्तों, बाध्यताओं और परिस्थितियों के अधीन नहीं बनायें। उसे परिभाषित भी नहीं करें। अगर आप ऐसा करते हैं तो वह प्रेम नहीं रह जायेगा। तब तो कहते हैं, अन-कंडिशनल लव। प्रेम का अस्तित्व तमाम बाहरी फैक्ट्रों के बावजूद भी रहता है। अगर हम उसे नहीं समझेंगे तो खुशी और शांति को भी अपने जीवन से गंवा देंगे।

कोशिश करें पर कमतर न समझें

हम मनुष्य हैं और मनुष्य कभी परफेक्ट नहीं होते। मनुष्य हैं तो भूलें भी होंगी और गलती भी होंगी। आप अगर अपना बेस्ट वर्सन बनने की कोशिश कर रहे हैं तो सब ठीक है। कोशिश करने का महत्त्व ही सर्वाधिक है। परिणाम तो देर-सवेर मिल ही जायेंगे। लेकिन परिणामों की खोज में कभी खुद को नीचा न दिखायें या किसी से कमतर न समझें। "लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।" महत्त्व कोशिश का है।

स्वयं को लाइट और माइट की मस्ती में रखो तो कभी जोश नहीं आयेगा

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

अपने को सदैव वेरी-वेरी लकी समझो। वेरी लकी समझने से विघ्न सहज ही विनाश कर सकेंगे। पता नहीं मेरी तकदीर में क्या है! ऐसा संकल्प उठाना माना संशय। मालूम नहीं- चल सकूंगा या नहीं, जाता हूँ ब्राह्मण परिवार में तो यह टक्कर आता, दुनिया में जाता तो यह विघ्न आते। आखिर क्या करूं। यह संकल्प भी संशय की निशानी है। मैं वेरी लकी हूँ, लकी उसको माना जाता जिसे अनेक दुनिया की ठोकरें आवें। पत्थर भी पूज्यनीय तभी बनता जब पानी की अनेक चोटें खाता। इसलिए कभी किन्हीं बातों से थको नहीं। मैं हमेशा समझती कि पेपर आना माना मुझे लकी बनाना। विघ्न आना माना भाग्यवान बनाना। अगर पेपर ही नहीं दिया तो मुझे विजयी कौन मानेगा। हज़ार पेपर आयें तो भी मैं 100 प्रतिशत पास रहूँ। हरेक अपना-अपना पेपर ले। कभी भी अपने दिल में किसी के प्रति नफरत नहीं उठाओ। झगड़े का कारण है एक-दो से नफरत। जड़ होती नफरत, बन जाता परचिन्तन, हो जाता दुश्मन। पहले होगी ईर्ष्या, वह पैदा करेगी नफरत, फिर परचिन्तन चलेगा, जिसका परचिन्तन करते वह दुश्मन बन जाता। एक बोल जीवन भर के लिए दुश्मन बना देता। एक ऐसा शब्द भी बोला जो किसी के हार्ट पर लग गया तो वह ज़िन्दगी भर दुश्मन बना देता। मैं ऐसा क्यों करूँ!

ब्राह्मणों में सबसे बड़े से बड़ा नुकसान कारक अवगुण है- "ज़िद्द का स्वभाव", जिसमें ज़िद्द है, उसपर मुझे बड़ा रहम आता। वह बड़ा धोखा खाते, सबसे ज़्यादा नुकसान इस ज़िद्द से होता है। ज़िद्द मनुष्य को रसातल पहुंचा देती इसलिए कभी किसी बात का ज़िद्द नहीं करना। कोई रॉन्ग है तो राइटियस बुद्धि से निर्णय करना है। ज़िद्द के स्वभाव से अपने को धोखा न दो। निर्णय करो। एक-दो को सहयोग दो, राय दो, अगर कोई ज़िद्द पकड़ता है तो आप हल्के हो जाओ। लाइट हो जाओ। स्वयं को लाइट और माइट की मस्ती में रखो तो कभी जोश नहीं आयेगा।

> हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का फाउण्डेशन है ईश्वरीय मर्यादा। दुनिया में मर्यादा नहीं, हमारी है टॉप मर्यादा। अगर हम किसी पर फेथ रखते हैं तो फेथ पर भी माया पानी डाल देती है। ऐसे अनेक अनुभव देखे हैं इसलिए हम कन्ट्रोल करते - कुमार-कुमारियां मर्यादा में रहो।

नव निर्माण के कार्य के लिए नम्र बनो। पुरुषार्थ से डरो नहीं। जब कोई फोर्स से कुछ कहता है तो उस समय उसकी मान लो। आप शीतल बन जाओ। अगर उस बात को लेकर दुश्मनी हो जाती तो नुकसान होता है। इसलिए याद में आपस में मिलकर मीठी धारणा की रूह रिहान करो, डिबेट नहीं करो। आपकी नम्रता का प्रभाव दूसरे पर ज़रूर पड़ेगा। एक की चर्चा दूसरे से नहीं करो। निर्माण बनना माना समा लेना। जब कोई बात आपस में नहीं बनती तो उसको छोड़कर स्व चिन्तन में रहो।

हमें कुमार-कुमारियों का बहुत फिकरात रहता। हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का फाउण्डेशन है ईश्वरीय मर्यादा। दुनिया में मर्यादा नहीं, हमारी है टॉप मर्यादा। अगर हम किसी पर फेथ रखते हैं तो फेथ पर भी माया पानी डाल देती है। ऐसे अनेक अनुभव देखे हैं इसलिए हम कन्ट्रोल करते - कुमार-कुमारियां मर्यादा में रहो। एक की गलती से सारे ब्राह्मणों को चोट लग जाती। एक के कारण हमें सबको बांधना पड़ता। सेन्टर पर कुमारियां अकेली रहती, आप उनसे बैठकर बातें करो- यह मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं कहती इस बात में समझो हम सन्यासी हैं। कुमार, कुमारी माना सन्यासी। सन्यासी माना हँसना, बोलना, वृत्ति-दृष्टि सबका सन्यास। जितना यह पाठ पक्का रखेंगे उतना अच्छा। अगर हल्के रहेंगे तो टीका होगी। किसी के कैरेक्टर पर दाग लगे, यह मेरे से सुना नहीं जाता। शॉक लगता। कोई मेरे कैरेक्टर पर आँच डाले यह मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा दाग है। परन्तु किसी का क्वेश्चन क्यों उठा- क्योंकि हल्के होकर चले।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम सभी बाबा के लवलीन बच्चे, सदा बाबा के लव में, प्यार में खोये हुए हैं। यह परमात्म प्यार कोटों में कोई को प्राप्त होता है क्योंकि हम डायरेक्ट बाबा की पहली रचना हैं। हमें सदा बाबा याद रहता है, बाबा के बिना तो संसार ही नहीं है। फिर है सूक्ष्म वतन और मूलवतन। उसका भी हम सबने अनुभव किया है, सिर्फ सुना व समझा नहीं है, अनुभवी मूर्त बन गये हैं। बाबा के

हद का मैंपन और मेरापन... यह बाबा से दूर कर देता

लव में लीन होने से कितनी मीठी, प्यारी लाइफ का अनुभव होता है। बाबा हम बच्चों को कहते हैं तुम मेरे बच्चे बेफिक्र बादशाह हो क्योंकि हमारी ज़िम्मेवारी लेने वाला भगवान है। अगर हमने मन से अपने जीवन की ज़िम्मेवारी बाबा को दे दी, तो भगवान से बड़ा और कोई है क्या! लेकिन यह ज़रूर देखना है कि सचमुच हमने अपने जीवन की ज़िम्मेवारी बाबा को दी है! या कभी बाबा को दी है, कभी थोड़ी जो भी सांसारिक बातें होती हैं, उनमें भी बुद्धि जाती है। हमारे सामने माया ही पेपर लेने वाली है। जब बाबा को ज़िम्मेवारी दे दी, तो उसके आगे माया कुछ नहीं कर सकती। तो बाबा को ज़िम्मेवारी दी है या कभी-कभी मैंपन आ जाता है? मैं और मेरापन, यह दो बातें ही इस ईश्वरीय जीवन में, सम्पन्न बनने में विघ्न रूप बनती हैं। हद का मैंपन या मेरापन, यह बाबा से दूर कर देता है। जब आप कहते हो बाबा मेरे से कम्बाइंड है, तो कम्बाइंड अलग हो ही नहीं सकता। जिसके साथ सर्वशक्तिवान कम्बाइंड हो उसके आगे माया की हिम्मत ही कैसे होगी!

शुरू में बाबा कहता था बच्ची, इतना मास्टर सर्वशक्तिवान बनो जो माया दूर से ही भाग जाये। दूर से माया को भगाने के लिए कम्बाइंड की स्मृति में रहें। कई कहते हैं हम कम्बाइंड तो हैं परन्तु समय पर उससे सहयोग नहीं लेते हैं। कोई को भी जब वार करना होता तो पहले वह अकेला करता है फिर वार करता है। हम कम्बाइंड से अलग होंवे ही क्यों! अगर कम्बाइंड रूप में सदा रहें तो माया कुछ नहीं कर सकती। हम युद्ध करें फिर मायाजीत बनें, उसमें भी हम टाइम क्यों खराब करें। अगर किसी को बार-बार बीमारी आती है, तो भले हम दवाई से बीमारी खत्म करें लेकिन बार-बार बीमारी आने से कमज़ोरी तो आ ही जाती है।

बाबा की आशायें पूर्ण करने वाले कौन! हम बच्चे ही हैं। हम बाबा की आशाओं के दीपक हैं। बाबा की आश हम बच्चों के प्रति क्या है! बाबा कहते हैं मेरे समान बनो। ऐसे नहीं, मेरे समान थोड़ा-थोड़ा तो बनो। नहीं, मेरे समान पूरा बनो। आजकल तो बाबा ने विशेष कहा है कि मैं एक-एक बच्चे को राजा बच्चा बनाता हूँ। स्वराज्य अधिकारी बनाता हूँ। तो हम अपने आप से पूछें हम राजा बच्चे हैं? क्योंकि राजा माना, जिसमें कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर हो। पहले हम पूछें कि हमारा मन के ऊपर कन्ट्रोल है? क्योंकि मन जीते जगतजीत कहा जाता है, जो भी फीलिंग आती है, तो पहले मन में फील होता है। तो मन के राजा बने हैं? सदा ही मन के राजा बनकर रहें, लिंक जुटा रहे इसके लिए बाबा ने बहुत अच्छी ड्रिल सुनाई है।

बाबा की मुरली में "सदा" शब्द यूज़ होता है, कभी-कभी शब्द तो ब्राह्मण जीवन की डिक्सनरी में है ही नहीं। हम भी अपने से पूछें, हम जो भी कर्म करते हैं, जो बाबा कहते हैं सदा लिंक जुटी रहे, ऐसे नहीं टूटे फिर हम जोड़ें, दुबारा जोड़ने से फर्क तो पड़ता है ना! तो मन हमारा ऑर्डर में चलता है? बाबा मन, बुद्धि, संस्कार की कचहरी लगाता था क्योंकि कई बार सूक्ष्म संकल्प इतना चेक करने में तो सूक्ष्म चेकिंग चाहिए कि सारा दिन मन का मालिक बनके मन को चलाया? हम सबका लक्ष्य है कि सम्पूर्ण, बाप समान बनना ही है। तो यह चेकिंग ज़रूरी है कि मन, बुद्धि, संस्कार सब कन्ट्रोल में हों। हाथ-पांव तो स्थूल कर्म कर्ता निमित्त हैं। लेकिन कभी संस्कार टक्कर में आ जाते हैं, बुद्धि भी कभी हाँ के बजाय ना की तरफ चली जाती है। यह चेकिंग जितनी अपनी कर सकते हैं, दूसरा नहीं कर सकता है।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

जैसा संकल्प, वैसी वाणी, वैसा कर्म

संगमयुग पर कमाई करते-करते बहुत बड़ी हो जाती है। आज के ज़माने में धन की कमाई बड़ी मेहनत से करते हैं। बहुत कमाने वाले सारा दिन सोचते हैं लेकिन अभी बाबा ऐसी कमाई कराते हैं जो सोचना बन्द। सोचेंगे तो नुकसान पड़ जायेगा, नहीं सोचेंगे, विश्वास और सच्चाई से काम करेंगे तो फायदा ही फायदा है। सोचने की बात ही नहीं है। शान्ति और प्रेम में कमाई ऐसी हो रही है, उसमें खुशी भी आ रही है। फिर जी चाहता है जैसे मेरी कमाई हो रही है, वैसे संगठन की भी कमाई हो जाये। इस पढ़ाई में ही कमाई है। उस पढ़ाई में पहले पढ़ते हैं फिर कमाई होती है। उसमें टाइम भी खर्च करते हैं, मनी भी खर्च करते हैं, लेकिन अभी बाबा जो हमको पढ़ाता है इसमें कमाई ही कमाई है। पढ़ाई जितना अच्छी पढ़ते हैं तो लगता है कि मेरी जीवन बहुत सुखी है। कोई फिकर की बात ही नहीं है। भविष्य के लिए जमा हो रहा है। जिस दिन पढ़ाई ठीक से नहीं पढ़ते हैं तो खुशी नहीं रहती है। इस पढ़ाई से न केवल खुशी, शक्ति आ रही है लेकिन उस शक्ति से हम हंस बन गये हैं। श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा हो रहा है, व्यर्थ खत्म हो गया। जैसा संकल्प, वैसी वाणी, वैसा कर्म।

तो संकल्प को समझना, समझ के संकल्प को पैदा करना, आपेही संकल्प न चलें, निकम्मे संकल्प न चलें। काम लायक संकल्प आयें, जिससे औरों को भी फायदा हो, मेरे को भी फायदा हो क्योंकि औरों को मिला सो मेरे को मिला। पढ़ाई में कमाई दोनों काम हो रहे हैं। जो खुद के मनन चिन्तन में है, उसके मुख में ज्ञान का सार स्पष्ट रूप में आ जायेगा। वह सार है मनमनाभव। कितना मेरा मन अच्छा हो गया!

बुद्धि को भगवान कहता है, मध्याजीभव। मनमनाभव में कर्मेन्द्रियां शान्त हो गयी फिर मध्याजीभव में चार बाहें आ गई। स्वदर्शनचक्र, ज्ञान-योग की प्रकाष्ठा आ गयी, विष्णु को कमल के फूल पर खड़ा हुआ दिखाते हैं। योगी कमल पुष्प पर बैठा हुआ दिखाते हैं। कमल आसन पर न्यारा होकर बैठा है। कईयों को समझ में ही नहीं आता है, बुद्धि से समझा है, पर अनुभव नहीं होता है, डिटैच और न्यारा कैसे हो।

अटैचमेंट का अनुभव बहुत है, कितना समय लगा है बाबा का बनने में। कितना दुःख दिया है फिर भी छोड़ते नहीं हैं। फ्री होते हैं तो डर लगता है, अकेलापन लगता है।

आदत है किसी को पकड़कर चलने की, नहीं तो बेसहारा है। जवानों को भी होता है, तो बूढ़ों को भी होता है, क्योंकि शरीर से अटैचमेंट बहुत है। बाबा न्यारापन सिखाता है। न्यारा रहने से योग अच्छा लगता है। तो कमलपुष्प समान प्युरिटी, ज़रा छींटें भी नहीं, इतना न्यारा है तो आसन पर बैठा है।

महिला सशक्तिकरण का अनूठा उदाहरण 'वन्दे मातरम्'

प्रकृति का शाश्वत नियम है रात के बाद दिन और दिन के बाद रात आने का। ठीक उसी तरह जब-जब मानव अपने धर्म, कर्म, मर्यादाओं से गिर जाता है तब-तब कोई न कोई प्रकाश की किरण ऊपर से नीचे उतरती है। जो दिखा जाती है जीवन का यथार्थ मार्ग। कोई न कोई पैगम्बर, महापुरुष, अवतार या मसीहा अवलंबन(सहारा) दे जाता है समाज को। बदल जाती है समय चक्र की धारा। आज हम उसी जगह पुनः खड़े हैं। अनगिनत हृदयों में यह स्वर झंकृत हो रहे हैं कि 'भगवान आओ, इस व्यथित भू के भार को उतारो, कहाँ हो? यह नाश का खेल कब तक चलता रहेगा।' निःसंदेह परिवर्तन की इस महावेला में सृष्टि रचयिता निराकार परमपिता परमात्मा शिव स्वयं अवतरित हो एक साधारण तन का आधार लेकर बदल रहे हैं सृष्टि की काया। अति की इति समीप है। धर्म ग्लानि का समय और परमात्मा के अवतरण का काल यही है। परमात्मा कौन है? क्या उसका भी जन्म अथवा अवतरण होता है? कौन है वह युगपुरुष जो परमात्मा का साकार माध्यम बनता है? कैसे युग परिवर्तन होता है? यह किसी नाटक का संवाद, पटकथा, पहेली अथवा सम्भाषण नहीं। स्वयं परमात्मा यह रहस्य सुलझा रहे हैं।

भगवान के यादगार महावाक्यों में उल्लेख है, 'मैं साधारण तन में अवतरित होता हूँ।' दादा लेखराज का तन ही वह साधारण तन है जिसमें भगवान का अवतरण हुआ। दादा लेखराज कलकत्ता में हीरे-जवाहरात का व्यापार करते थे। आपके अंदर बचपन से ही भक्ति के संस्कार थे। आपने लौकिक में 12 गुरु किये थे। साठ वर्ष की आयु में आपको निराकार परमपिता परमात्मा ने इस कलियुगी दुनिया के महाविनाश और आने वाली नई सतयुगी दुनिया के दिव्य साक्षात्कार कराये और आपके तन में प्रविष्ट होकर नये युग की स्थापना का कार्य प्रारंभ किया। आपको अलौकिक नाम मिला 'प्रजापिता ब्रह्मा'। गायन है कि प्रजापिता ब्रह्मा ही आदि देव हैं। प्रथम ब्राह्मण और प्रथम पुरुष हैं। नई सृष्टि की पहली कलम हैं, भगवान के प्रथम पुत्र और सृष्टि के अग्रज, पूर्वज और प्रपितामह हैं। भगवान के बाद सृष्टि रंगमंच के सबसे महत्त्वपूर्ण रंगकर्मी हैं, लेकिन फिर भी बिल्कुल गुप्त हैं। आपने ही प्रजापिता ब्रह्मा का कर्त्तव्यवाचक नाम पाकर अपने मस्तक में ज्ञान सागर समाया और उस ज्ञान सागर ने पतित आत्माओं को पावन बनाने के लिए आपके मुख से ज्ञान-गंगा बहाई।

आपने परमात्मा के आदेश अनुसार अपने व्यापार को समेट लिया और सिन्ध हैदराबाद में अपने ही घर में ओम मण्डली नाम से एक ट्रस्ट बनाकर अपनी संपत्ति कन्याओं-माताओं के सामने समर्पित कर दी, इस प्रकार, एक छोटे सत्संग के रूप में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शुरूआत हुई। कराची में समुद्र के किनारे चौदह वर्ष तपस्या करने के पश्चात् सन् 1950 में इस विद्यालय में समर्पित सभी भाई-बहनें स्थानांतरित होकर राजस्थान के अरावली पर्वत - माउण्ट आबू में आये, यहीं विद्यालय का मुख्यालय स्थापित हुआ। सन् 1952 से भारत में ईश्वरीय सेवायें प्रारंभ हुई। पिताश्री ने अपनी गहन तपस्या एवं उपराम स्थिति द्वारा समाज के हर वर्ग को ऊंचा उठाने की अनुपम सेवा की। अनपढ़ हों या पढ़े-लिखे, गरीब हों या अमीर, नर हों या नारी- सभी की सुषुप्त आध्यात्मिक शक्तियों को जागृत कर पिताश्री ने उनमें देवत्व भर दिया।

आज तक हम 'वन्दे मातरम्' सिर्फ कहने तक ही कहते आये परन्तु इसका मर्म गहन है जिसे लेख में हम आगे समझेंगे -

कन्याएं हैं कन्हैया लाल की

यदि कन्याएं ईश्वरीय ज्ञान सुनने आतीं तो बाबा कहते, 'वे तो हैं ही कन्हैया लाल की कन्याएं। कन्याओं का तो भारत में नवरात्रि में भी पूजन होता है क्योंकि उन्होंने पहले भी भारत को पतित से पावन और पुजारी से पूज्य बनाने का कार्य किया है। भारत की कन्या तो वैसे ही सबसे गरीब है क्योंकि उसका पिता की संपत्ति पर ज़रा भी अधिकार नहीं है।'

शेर वाहिनी शक्ति

कन्या में नम्रता, सहनशीलता तथा संकोच इत्यादि गुण भी होते ही हैं। अतः बाबा कहते - 'सुशील कन्या तो सौ ब्राह्मणों से भी उत्तम है। यह तो है ही भगवान की अमानत। क्यों बच्ची! अब तो विष कभी नहीं पियेंगी और शेर-वाहिनी शक्ति बनेंगी? क्यों बच्ची, ऐसा है न?' तो कन्याएं कह उठतीं - 'हाँ बाबा, हम तो पवित्रता का व्रत ले, भारत की सच्ची सेवा करेंगी। हम ज्ञान गंगायें बनकर भारत को पावन करने के निमित्त बनेंगी।' इस प्रकार, पिताश्री कन्याओं के कल्याण के निमित्त बने।

कन्या- पवित्रता और शक्ति का पर्याय

यह कैसे आश्चर्य की बात है कि जहाँ आमतौर पर भारत में, घर में, कन्या का जन्म होने पर माता-पिता उदास से हो जाते हैं, वहाँ बाबा कन्याओं का ज्ञान में प्रवेश देखकर उन्हें विश्व के लिए शुभ लक्षण मानते। एक कन्या के आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेने पर वे इतने खुश होते कि जैसे इन द्वारा अब भारत के सौ व्यक्तियों के मनोस्थल से तो आसुरियता नष्ट होनी ही है। अतः शायद पिताश्री ही संसार में साकार रूप में एक ऐसे पिता अथवा पितामह थे जो अधिक से अधिक ज्ञान-पुत्रियां होने से खुश होते थे। उनके लिए 'कन्या' शब्द ही पवित्रता एवं शक्ति का पर्याय था। ज्ञान-युक्त एवं सुशील कन्याओं के प्रति उनका इतना स्नेह और सम्मान होता था कि वे दिव्यतायुक्त पुरुषों के लिए भी कई बार सहसा 'हे बच्ची' ऐसा कहकर संबोधन करते थे।

कन्याओं-माताओं को सर्वस्व समर्पित

यदि गहराई से विचार किया जाये तो महिलाओं को समाज में उचित मान दिये जाने, उन्हें उचित अधिकार मिलने और उनकी जागृति के लिए संगठन बनाने की ओर बाबा ने जो कदम लिये, वे अपनी प्रकार के अनूठे थे, वैसे कदम उससे पहले किसी ने नहीं उठाये थे। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बाबा ही सबसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपना सर्वस्व कन्याओं-माताओं का एक ट्रस्ट(न्यास) बनाकर उसको समर्पित कर दिया। पिताश्री को कन्याओं-माताओं का अपमान असहय था। जब वे जवाहरात का व्यापार करते थे तब यद्यपि वे श्रीनारायण के अनन्य भक्त थे तथापि वे चित्रों में दासी की तरह श्रीलक्ष्मी को विष्णु के पाँव दबाते हुए नहीं देख सकते थे। अतः वे चित्रकार को विशेषतया बुलाकर चित्र का यह भाग बदलवा देते थे। वे प्रायः विनोद भरे स्वर में कहा भी करते थे कि 'मैं चित्रकार से कहकर श्रीलक्ष्मी को इस सेवा से मुक्त करा देता था।'

अब नारियों द्वारा ही 'ओम' की अग्रध्वनि

पिताश्री के मुखारविन्द द्वारा जब शिवबाबा की ज्ञान सरिता स्रवित हुई तब नारी का तिरस्कार करने रूप जो कल्मष समाज पर था, वह धुलने लगा। जो कन्यायें-मातायें पिताश्री जी के सत्संग में आतीं, वे 'ओम' की ध्वनि किया करतीं और ज्ञान के गीतों द्वारा दूसरों को भी पवित्र जीवन का संदेश देतीं। इस प्रकार, सन्यासी लोग ग्रंथों की दुहाई देकर जो यह कहते चले आते थे कि नारी को ओम कहने का भी अधिकार नहीं है, बाबा ने उनके इस कथन को प्रैक्टिकल रीति मिथ्या सिद्ध कर दिया। स्वयं बाबा अपने प्रवचनों में कन्याओं-माताओं को कहा करते कि अब आप रिढ(बकरी) बनना छोड़ो और शेरनी बनो। बाबा ने उन्हें समझाया कि स्त्री रूप तो प्रकृति(अर्थात् देह) का है, आप तो पुरुष(आत्मा) हो, क्षेत्र नहीं हो, क्षेत्रज्ञ हो। अतः भय को छोड़ो और देही अभिमानी तथा अभय बनो। बाबा ने उनके लिए सिलाई और पढ़ने-लिखने की व्यवस्था की। बाबा ने एक-दो बहुत बड़े भवन भी इस कार्य में लगा दिए थे ताकि उनका बौद्धिक विकास हो और साथ-साथ वे आत्मनिर्भर हो सकें। उनके लिए स्वयं बाबा ने बहुत से गीत भी बनाये जोकि वहाँ सभा में गाये जाते थे। उनमें से एक गीत ऐसा भी था जिसमें यह बताया गया था कि जो कानों में इतनी सारी बालियाँ, हाथों में इतनी सारी चूड़ियां रूपी कड़ियां और नाक में गुलामी की नथ पहने हुए हैं, वे पिंजरे की मैना हैं। आज़ाद वे हैं जो फैशन, बनावट व सजावट इत्यादि से मुक्त हो सादगी, त्याग, तपस्या और आत्मनिर्भरता का जीवन अपनाते हैं।

> यदि गहराई से विचार किया जाये तो महिलाओं को समाज में उचित मान दिये जाने, उन्हें उचित अधिकार मिलने और उनकी जागृति के लिए संगठन बनाने की ओर बाबा ने जो कदम लिये, वे अपनी प्रकार के अनूठे थे, वैसे कदम उससे पहले किसी ने नहीं उठाये थे। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बाबा ही सबसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपना सर्वस्व कन्याओं-माताओं का एक ट्रस्ट(न्यास) बनाकर उसको समर्पित कर दिया।

माता गुरु द्वारा होगा उद्धार

बाबा उन्हें प्रेरणायें देते कि जगत की माताओं और कन्याओं, अब जागो और ज्ञान की ललकार करो। तुम्हारे द्वारा ही जगत का कल्याण होना है। जब माता गुरु बनेगी, तब ही भारत की संतानों का उद्धार होगा। तुम्हारे कारण ही भारत का उत्थान रुका है। तुम केशों का श्रृंगार करने में लगी हो और उधर भारत माँ के लाल ज्ञान के बिना विकारों में ग्रस्त हैं, आसुरियता से संत्रस्त(अत्यंत डरा हुआ) हैं और दुःख तथा अशान्ति से कराह रहे हैं। कितनी ही कन्याओं-माताओं ने उनकी इस चुनौतीपूर्ण, प्रेरणादायक ध्वनि से जागृत होकर राजऋषि अथवा राजयोगिनी के आसन को ग्रहण किया और अपने केश खोलकर मन में अपने आप से यह प्रतिज्ञा की कि अब हम अपने आपको पाँच विकारों से मुक्त करके ही दम लेंगी और भारत भूमि पर निर्विकारी स्वराज्य स्थापित करके ही रहेंगी। बाबा की उन्हीं शिक्षाओं व प्रेरणाओं का ही मधुर फल है कि आज ब्रह्माकुमारी बहनों-माताओं का इतना बड़ा शक्तिदल भारत को पवित्र बनाने में लगा है।

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी, राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, राजयोगी ब्र.कु. करूणा, राजयोगी ब्र.कु. गोपाल, राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी तथा अन्य भाई-बहनें।

राहतगढ़-म.प्र.। कार्यक्रम में सजाई चैतन्य झांकी का अवलोकन करने के पश्चात् चित्र में साथ हैं कैबिनेट के राजस्व एवं परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत, हरि सिंह ठाकुर तथा ब्र.कु. नीलम बहन।

येवला-महा.। 'येवला-नक्षत्र काव्य व साहित्य मंच' कार्यक्रम में राष्ट्रीय पत्रकार संघ के अध्यक्ष महेंद्र देशपांडे एवं डॉ. शुभदा जगदाले,मिसेज़ यूनिवर्स आइकॉनिक अवॉर्ड दुबई द्वारा ब्र.कु. नीता बहन को नक्षत्र नवदुर्गा पुरस्कार भेंट कर सम्मानित किया गया।

पन्ना-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय शरद पूर्णिमा महोत्सव के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में श्री 108 श्री प्राणनाथ मंदिर ट्रस्ट द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया तथा श्री प्राणनाथ मंदिर ट्रस्ट के प्रमुख डॉ. दिनेश पंडित जी द्वारा ब्र.कु. सीता बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका को स्मृति चिन्ह, शॉल एवं पुष्प आदि भेंट कर सम्मानित किया गया।

नवसारी-गुज.। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता दीदी, नवसारी विजलपोर नगरपालिका की प्रमुख मिनलबेन देसाई तथा विभिन्न कमेटी की चेयरमैन महिला पदाधिकारी गण। कार्यक्रम में ब्र.कु. भानु बहन सहित लगभग 150 भाई-बहनें शामिल रहे।

रतलाम-म.प्र.। सन टू ह्यूमन संस्था के वक्ता पूज्य परम आलय जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता दीदी तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

बस ये दो शब्द...

मिसअंडरस्टैंडिंग तब होती जब बोलने वाले के भी स्पष्ट भाव नहीं हैं, उसके मन में भी कुछ दुविधा चल रही है। और जो सुनने वाला है वो तो फिर क्या लेगा। वो भी मिक्सड मैसेज लेगा। ये भी हो सकता है, वो भी हो सकता है। पूरा उन्हों के सामने भी स्पष्ट नहीं होगा।

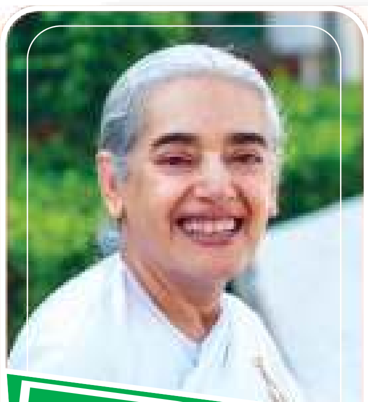

राजयोगिनी ब्र.कु.जयंती दीदी,अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

कईयों ने तो दादी गुल्ज़ार को भी नहीं देखा तो दादी प्रकाशमणि या मम्मा की तो बहुत पीछे के इतिहास की बात हो गई। परन्तु आप समझ सकती हैं और आजकल तो वीडियो द्वारा कितनी बातें सब तरफ पहुंच जाती हैं। मुझे याद आता है कि किसी ने मुझे कहा कि मैं चाहती थी कि मम्मा को मैं ज़्यादा जानूं, तो मैं सोचती थी कि मैं कैसे जान सकती हूँ! तो फिर उसने खोज की और अपनी खोज से उसको मम्मा की कुछ बुक्स का पता चला और मम्मा की वाणी की बहुत सारी बातें मिलीं, तो कुछ सप्ताह के बाद उसने कहा कि अभी मुझे लगता है कि मैं मम्मा को अच्छी तरह से जानती हूँ। और हाँ मैं मम्मा को उस कदम में फॉलो कर सकती हूँ।

तो आज का टेक्नोलॉजी का साधन ऐसे है जो बेशक हम फिज़िकल हिसाब से इन दादियों से न भी मिले हों, जो मिले हैं उन्हों का तो सौभाग्य। जो न मिले हैं वो ये नहीं कह सकते कि हम उन्हों को जानते नहीं। जैसे शिव बाबा को इन आँखों से तो नहीं देख सकते परंतु बुद्धि से तो जान सकते हैं। इसी तरह से जिन्होंने इतने यज्ञ की स्थापना के कार्य में मदद की, सेवायें की, जो इतना फाउंडेशन मजबूत चल रहा है और वृद्धि को प्राप्त करते जा रहे हैं। उन्हों की भी आप बिल्कुल थोड़ा-सा खोज करेंगे तो आपको बहुत कुछ उसकी जानकारी मिलेगी। और आप उन्हों को अपने आँखों के सामने देखेंगे, जैसे फरिश्ते घूम रहे हैं और आपको उन्हों के द्वारा वो प्राप्ति हो सकेगी।

तो मैं इस कारण से आपको वो एग्ज़ाम्पल्स दे रही हूँ, जो बेशक अभी आँखों के सामने नहीं हैं परन्तु फरिश्ते रूप में तो अवश्य ही हम सबके सामने हैं। तो कम बोलना और धीरे बोलना। आपने सोचा होगा कभी हाई गवर्नमेंट ऑफिसर्स होते हैं या कोई रॉयल फैमिली का होता है कलियुग के अन्त में भी तो वो ऊंचे आवाज़ से नहीं बोलते। वो अपने बहुत शांति की आवाज़ से बात करते हैं। कई आपसे मिले भी होंगे, कई आपने टेलिविज़न पर देखा भी होगा। तो दादियों का भी कभी किसको बड़े आवाज़ से पुकारे यहाँ आओ, नहीं। इशारे से। उन्हों का कम बोलना, धीरे बोलना ऐसे था कि बहुत कुछ इशारों से ही चलता था। और दादियों को वो भी पसंद होता था कि उन्हों के आजू-बाजू में सेवा करने वाले हैं वो भी दादियों के इशारे को समझ कर बात करें। नहीं तो ये भी सोच सकते हैं कि परन्तु दादी ने मुझे कहा थोड़े ही। दादी कहेंगी, कोई भी दादी, दादी कहेंगी क्या आपने मेरे इशारे को नहीं समझा! कहने की बात तो थी ही नहीं। आप मुझे जानते हो। आप इशारों से समझ सकते थे। तो वो बहन ज़रूर ऐसे कहेगी जी दादी। हाँ सॉरी।

कम बोलने की एक आदत होती है। जो डालनी होती है। कई कहते हैं कि मेरा आवाज़ ही बहुत बड़ा है। परन्तु बड़े आवाज़ को भी नॉर्मल रूप से बात करना या बड़े आवाज़ को बहुत ऊंचे रूप से बात करना वो भी अपने हाथ की ही बात होती। तो धीरे बोलना ये भी बहुत ही आवश्यक बात है। और ऐसे अपना माइंड क्लीयर हो जो हम थोड़े शब्दों में धीरे बोलने से अपने भाव को स्पष्ट किसके सामने करें। आप सोचो कि मिसअंडरस्टैंडिंग कब होती है। मिसअंडरस्टैंडिंग तब होती जब बोलने वाले के भी स्पष्ट भाव नहीं हैं, उसके मन में भी कुछ दुविधा चल रही है। और जो सुनने वाला है वो तो फिर क्या लेगा। वो भी मिक्सड मैसेज लेगा। ये भी हो सकता है, वो भी हो सकता है। पूरा उन्हों के सामने भी स्पष्ट नहीं होगा।

तो ये दो बातें पहले, फिर मीठा बोलना, ऊपर-ऊपर से मीठा बोलने का भाव नहीं निकलता। वो भी लोग आजकल समझ ही जाते हैं कि ये तो ऊपर-ऊपर से ही बात कर रहे है या रहा है। उन्हों के तो मन के भाव अलग हैं और शब्दों का भाव अलग है। हरेक को ये फीलिंग आती है। परन्तु जब हम ये मंत्र याद करते कि मीठा बोलना है उसका मतलब ये है कि आत्मा ने अपने अन्दर की इतनी सफाई की हुई हो जो बाबा कहते थे कि पवित्रता की स्टेज वो हो जो व्यर्थ कुछ भी न आये। न संकल्प में और न स्वप्न में।

सूरत-रांदेर(गुज.)। नवनिर्मित 'दिव्य वरदानी भवन' का उद्घाटन एवं बहनों के समर्पण समारोह का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लीला दीदी, ब्रह्माकुमारीज़ सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. रंजन बहन, गुजरात राज्य के वन और पर्यावरण,जलवायु परिवर्तन,जल संसाधन और जल आपूर्ति राज्य मंत्री माननीय मुकेश पटेल।

रामायण में दर्शाये पात्र का हमारे जीवन से सम्बन्ध

जानें....

जिस दिन मोह खत्म... उस दिन रावण खत्म...

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि कैसे हनुमान को उनकी शक्तियों की स्मृति दिलाई, जो विस्मृत हो चुकी थीं। जब स्मृति आई तब जाकर उनके अन्दर श्री राम की मदद करने की हिम्मत आई। तो समुद्र लांघने का काम कर देता है। फिर जैसे ही समुद्र लांघने जाता है तो फिर एक माया खड़ी हो जाती है। ब्राह्मण जीवन में फिर एक माया आती है। कौन-सी? महावीर के सामने भी माया आती है कौन-सी? 'सुरसा और सिंहिका' समुद्र से निकल आई। और कहा कि हमें ब्रह्माजी का वरदान है, और तुम्हें हमारे मुख से गुज़रना होगा, तो उस समय हनुमान ने क्या किया, अपना रूप बहुत सूक्ष्म कर दिया। यानी बाबा जो कहते हैं 'बालक सो मालिक'। कभी 'मालिक' बन जाओ, कभी 'बालक'। बालक बनकर छोटा हो जाओ, आज्ञाकारी बन चलो। महावीर का ये लक्षण 'बैलेन्स' बहुत अच्छा है।

तब कब निकल कर आ गया पता ही नहीं चला, और उस माया के ऊपर भी विजय प्राप्त कर ली। लेकिन लंका पहुँचा तो वहाँ लंकिनी थी। वहाँ छोटा रूप लेकर जा रहा था तो कहा कि अरे तू कहाँ जा रहा है? तो वहाँ उसने बड़ा रूप कर दिया, और इतना बड़ा कर दिया जो उस लंकिनी को समाप्त। तो कहाँ बड़ा बनना है और कहाँ छोटा बनना है? ये बैलेन्स भी जीवन के अन्दर बहुत ज़रूरी है। और जैसे ही ये बैलेन्स रखा तब जाकर रावण के दरबार में पहुंच गया और पहुँचने के बाद रावण ने उसका अपमान किया, उसको आसन नहीं दिया, तो उसने अपना आसन इतना ऊँचा कर दिया, रावण से भी ऊँचा। यानी लोग आपका अपमान करेंगे, ब्राह्मण जीवन में रावण अपमान करवाता रहेगा आपका लेकिन ऐसे समय पर अपने स्वमान में स्थित हो जाओ। और अपने स्वमान को इतना ऊँचा कर दो, ये बहुत ज़रूरी है। लेकिन स्वमान के साथ-साथ दूसरी दो चीज़ें ज़रूरी हैं – जो अंगद आता है और अंगद माना दृढ़ संकल्पधारी और दूसरा निश्चय बुद्धि। पैर रख दिया और रावण को कहा हिलाकर दिखा! अगर मेरा पैर हिल गया तो माता सीता तेरी। निश्चबुद्धि, हिलेगा नहीं राम मेरे साथ है। सारे बन्दर परेशान हो गये हैं, ये क्या कह दिया अंगद ने? अगर हिला दिया तो? रावण हँसने लगा कि मैं तो क्या मेरे महारथी ही तेरे पैर को हिला देंगे। हिलाने की कोशिश की हिला नहीं, तब रावण स्वयं आता है हिलाने के लिए, पैर कौन-सा? बुद्धि रूपी पैर को हिलाने का प्रयत्न रावण करता है। 'निश्चयबुद्धि' जो आत्मा है उनकी बुद्धि को हिलाने का प्रयत्न रावण ज़रूर करेगा, वो रावण है, माया नहीं है। रावण जब पैर हिलाने का प्रयत्न करने गया तो जैसे ही वो आया, उसको लात मार दी और कहा कि पैर पकड़ना है तो श्री राम के पकड़, मेरे नहीं।

तो इसीलिए जीवन में महावीर बनकर आगे चलने के लिये, अनुमान-अभिमान का हनन, दूसरा दृढ़ता की शक्ति और निश्चयबुद्धि बनना आवश्यक है। तभी हर प्रकार के रावण की परीक्षाओं से पार हो सकेंगे और ऐसे निश्चयबुद्धि के बन्दरों ने कहा कि अरे हिला देता तो क्या करता, रावण के महारथी ही। तो कहा पैर रखना मेरा काम, हिलाना और न हिलाना उसका काम। 'निश्चयबुद्धि' कि मैंने पैर भी अगर उसके भरोसे रखा है तो एक बल एक भरोसा। उसके भरोसे रखा है तो रावण की भी ताकत नहीं है। रावण तो क्या, बाबा कई बार कहते हैं मुरली में कि रावण का बाप भी आ जाये तो भी हिला न सकें। रावण का बाप कौन है? रावण का बाप कौन है? शिवबाबा। शिवबाबा है। शिवबाबा भी अगर हिलाने का प्रयत्न करें तो भी हिलने वाले नहीं, ऐसे 'निश्चयबुद्धि'। क्योंकि रावण कोई असुर नहीं था- ब्राह्मण था, याद रखना। लेकिन जिन ब्राह्मणों में अहंकार आ जाता है अपनी विशेषताओं को लेकर, वही रावण है। रावण भी किसकी पूजा करता था? शिवबाबा की। तो वो आत्मायें, हैं अहंकारी लेकिन याद तो शिवबाबा को करती हैं ना? जैसे कहा कि रावण तो क्या रावण का बाप भी आ जाये तो हिला नहीं सकता, इतना निश्चयबुद्धि। तभी रावण को खत्म करने की शक्ति हमारे में आ जायेगी। तो पूरी रामायण ब्राह्मण जीवन है।

फिर रावण को मारना है, तो रावण को मारने की युक्ति क्या है? नाभि में मारो, नहीं तो सिर काटता था दूसरा निकल आता था, इसीलिए विभीषण ने कहा कि नाभि में मारो। तो नाभि कौन-सी है रावण की? रावण की नाभि है 'मोह'। स्वयं से जब मोह है तो अहंकारी हो गया। दूसरों से जब मोह है तो आसक्ति, प्रलोभन के वश है। इसीलिए सभी विकारों की जड़ मोह, तभी गीता के अन्दर भी भगवान ने अर्जुन को कहा कि नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। नाभि से ही पोषण मिलता रहता है, आप अभिमान को काटो नहीं, मोह को काटो। मोह जिस दिन खत्म हुआ, रावण मर गया। इसीलिए रावण की नाभि में मारना माना नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा।

यही अठारह अध्याय गीता का सार और यही रामायण का भी सार, नष्टोमोहा बनो। हम ब्राह्मणों के अन्दर अभी भी थोड़ा-थोड़ा अंश रावण का है, इसलिए उसको समाप्त करना ज़रूरी है।

रावण कोई असुर नहीं था- ब्राह्मण था, याद रखना। लेकिन जिन ब्राह्मणों में अहंकार आ जाता है अपनी विशेषताओं को लेकर, वही रावण है।

पुणे-जगदम्बा भवन। सुरक्षा सेवा प्रभाग ने पुणे के जगदम्बा भवन से कार अभियान शुरू किया। शुभारम्भ राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी,वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरक्षा सेवा प्रभाग, ब्र.कु. सुनंदा दीदी,निदेशिका जगदम्बा भवन, मेजर जनरल गोपाल वर्मा,वीएसएम बार, मकरंद जोशी,प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, लेफ्टिनेंट जनरल नरेंद्र कोटवाल एसएम, वीएसएम, पुणे से दशरथ भाई एवं सेवानिवृत्त कर्नल बीसी सती, कैप्टन शिव सिंह आदि ने दीप प्रज्वलित कर किया।

पुणे-मीरा सोसायटी(महा.)। पुणे शिवाजीनगर एरिया में ब्रह्माकुमारीज़ के नये सेवाकेन्द्र के उद्घाटन एवं कलश पूजा कार्यक्रम में कस्बा पेठ निर्वाचन क्षेत्र के अनेक विधायक, ऑफिसर्स व अनेक गणमान्य लोगों सहित ब्रह्माकुमारीज़ के मीरा सोसायटी सबज़ोन की इंचार्ज ब्र.कु. सुनंदा बहन, निदेशिका ब्र.कु. नलिनी बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

शिवाजी नगर-थाने(मुम्बई)। स्वयंभू भवानी माता मैदान में स्थानीय नगरसेविका श्रीमती कांचन चिंदरकर की ओर से नवरात्रि के तहत आयोजित गरबा रास के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चैतन्य देवियों की झाँकी लगाई गई। जिसका सुनील चव्हाण अधिकारी थाने महानगर पालिका, हनुमंत जगदाले समाज सेवक, सुखदा मोरे नगरसेविका, मीनाक्षी शिंदे पूर्व महापौर,थाने महानगर पालिका, नरेश महस्के थाने जिला संपर्क प्रमुख शिवसेना आदि गणमान्य लोगों सहित हज़ारों लोगों ने अवलोकन किया। इस मौके पर कांचन चिंदरकर एवं विजय चिंदरकर ने ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. सरला दीदी तथा ब्र.कु. ज्योत्सना बहन का सत्कार किया।

For Online Transfer

Name: OM SHANTI MEDIA OF RERF
Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319
Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रूपये, तीन वर्ष - 720 रूपये, आजीवन - 6000 रूपये
Website: www.omshantimedia.org

स्वास्थ्य

मूंगफली खाने का सबसे हेल्दी तरीका

ड्राई फ्रूट को भिगो कर खाना उनकी पौष्टिकता को डबल करने का सबसे आसान और प्रभावी तरीका है। आपने बादाम, किशमिश, खजूर को तो बहुत भिगो कर खाया होगा, लेकिन क्या कभी मूंगफली को भिगो कर खाया है?

हमने ऐसा बहुत सुना है कि बादाम को भिगो कर खाने से सेहत को काफी फायदे होते हैं, लेकिन क्या आपने कभी किसी को मूंगफली को भिगो कर खाते हुए देखा है? शायद देखा होगा, लेकिन बहुत कम देखा होगा। काफी समय से ऐसा कहा जाता है कि आपको ड्राई फ्रूट को भिगो कर खाने चाहिए क्योंकि इससे सेहत को दो गुना फायदा मिलता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि मूंगफली को भिगोकर खाना भी सेहत को ढेर सारे फायदे दे सकता है।

मूंगफली को भिगो कर खाने के फायदे

1. पाचन शक्ति में करे सुधार

मूंगफली को भिगोने से उनमें फाइटिक एसिड की मात्रा कम हो जाती है। फाइटिक एसिड को एक पोषक विरोधी माना जाता है क्योंकि यह कैल्शियम, मैग्नीशियम और जंक जैसे खनिजों से बंध सकता है, जिससे वे अवशोषित नहीं हो पाते हैं। भिगोने से फाइटिक एसिड को तोड़ने में मदद मिल सकती है, जिससे मूंगफली में पोषक तत्व पाचन और अवशोषण के लिए काफी आसान हो जाते हैं।

2. पोषक तत्वों का बेहतर अवशोषण

भिगोने से मूंगफली फाइटिक एसिड कम करती है, भिगोने से मूंगफली में आवश्यक खनिजों के अवशोषण में भी सुधार हो सकता है। इससे आपका शरीर नट्स में मौजूद मैग्नीशियम और आयरन जैसे खनिजों का बेहतर उपयोग कर सकता है। बेहतर पोषण का अवशोषण शरीर में कई तरह के फायदे पहुंचा सकता है।

3. एलर्जी को करता कम

कुछ लोगों को मूंगफली खाने से एलर्जी होती है। जिससे वो भिगो कर मूंगफली खाना पसंद करते हैं। भिगो कर मूंगफली खाने से एलर्जेनिक क्षमता को कम करने में भी मदद मिल सकती है। मूंगफली में मौजूद कुछ तरह के प्रोटीन के प्रति काफी लोग संवेदनशील होते हैं, जिससे उन्हें एलर्जी का सामना करना पड़ सकता है। नट्स को भिगोने से इनमें एलर्जी प्रतिक्रियाओं के जोखिम को कम करने में मदद मिल सकती है।

4. खराब पोषक तत्वों की कमी

फाइटिक एसिड के अलावा, मूंगफली में लेक्टिन जैसे अन्य एंटी-पोषक तत्व भी हो सकते हैं। भिगोने से इन यौगिकों के स्तर को कम करने में मदद मिल सकती है, जिससे संभावित रूप से मूंगफली पाचन तंत्र के लिए आसान हो जाती है।

भीगी हुई मूंगफली डाइट में एड करने का सही तरीका

मूंगफली को एक कटोरे में रखें। और उसमें डुबाने के लिए पर्याप्त पानी डालें। यदि चाहें तो एक चुटकी नमक या अपनी पसंद का कोई अन्य स्वाद डाल सकते हैं।

मूंगफली को कई घंटों या रात भर के लिए भीगने दें। भिगोने का समय अलग-अलग हो सकता है, लेकिन आमतौर पर 4 से 12 घंटे तक होता है।

भिगोने के बाद, मूंगफली को छान लें और अच्छी तरह से धो लें।

यदि आप कुछ क्रंची खाना पसंद करते हैं और कुछ रोस्टेड स्वाद चाहते हैं तो आप भुनी हुई मूंगफली को प्राथमिकता दे सकते हैं।

भुज-कच्छ(गुज.)। 'जीवन मूल्य के अमृत मंथन' कार्यक्रम में कछियत के 'अमृत पुस्तक' का विमोचन करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की मोटिवेशनल स्पीकर एवं जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी बहन, कच्छमित्र दैनिक के तंत्री दीपक भाई मांकड़, विधायक केशुभाई पटेल, नगरपति रश्मि बहन देसाई, ब्र.कु. रक्षा बहन, ब्र.कु. निहा बहन, ब्र.कु. बीना बहन, ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य।

नरसिंहपुर-गाडरवारा(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु उपवन भवन सेवाकेन्द्र द्वारा नवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में राव उदय प्रताप सिंह,सांसद नर्मदा पुरम, श्रीमती सुनीता पटेल,क्षेत्रीय विधायक गाडरवारा, वरिष्ठ व्यापारी जिनेश जैन, इंजी. सोनपुरी जी, ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. कुसुम दीदी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उर्मिला दीदी तथा अन्य।

पुणे-पिंपरी(महा.)। नवरात्रि के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा स्थानिक मंडल और संगठन के सहकार्य के साथ भैरवनाथ चौक पिंपरी गांव, देवी संस्थान पिंपरी गांव, पंचनाथ मित्र मंडल, देहु नवदुर्गा मंडल, गोकुल वाडा मित्र मंडल पवनानगर, काळेवाडी आदि विभिन्न स्थानों पर चैतन्य देवियों की झाँकी का विशेष आयोजन हुआ जिसमें सभापति महिला व बालकल्याण समिति पूर्णिमा परदेसी, उद्योजक समाजसेवक विशाल परदेसी, पूर्व नगरसेवक प्रमोद ताम्हणकर, प्रतिभा ताम्हणकर, पंचनाथ मंडल के सदस्य प्रियदर्शनी सोशल ग्रुप एवं समाजसेवक जवाहर कोटवाणी आदि की विशेष उपस्थिति रही। साथ ही स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुरेखा दीदी व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें भी मौजूद रहे। 15 से 20 हज़ार लोगों ने इन कार्यक्रमों का लाभ लिया।

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर का अवलोकन करने आये शंकराचार्य इंजीनियरिंग कॉलेज के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए ब्र.कु. सविता दीदी।

राजनांदगांव-छ.ग.। बलदेव बाग स्थित इंडो तिब्बत बॉर्डर पुलिस के जवानों के लिए आईटीबीपी कैम्प में आयोजित 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम में ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. झालम भाई, ब्र.कु. पूनम बहन, आईटीबीपी के आपदा प्रबंधन अधिकारी तथा आर्मी के जवान भाई उपस्थित रहे।

ग्वालियर-इंदरगंज(म.प्र.)। कंपू स्थित 3 एम.पी. नेवल यूनिट एनसीसी ग्वालियर में आयोजित ट्रेनिंग कैम्प के दौरान सभी कैडेट्स का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्रहलाद भाई। इस दौरान कैम्प कमांडेंट कर्नल आकाश शर्मा, कर्नल अरविंद झा, डिप्टी कैम्प कमांडेंट चीफ इंस्ट्रक्टर गौरव सिंह चंदेल, पीटी ऑफिसर संदीप, अंकित पांडे, जीसीआई अदिति बिसेन, सीटीओ प्रमोद दिवाकर, रिया, ब्र.कु. पवन सहित 350 से अधिक एनसीसी कैडेट्स उपस्थित रहे।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। चुनाव ड्यूटी में आए भारत तिब्बत पुलिस बल के जवानों को दिव्य दर्शन भवन में आध्यात्मिक प्रशिक्षण देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सविता दीदी, इंस्पेक्टर गंभीर सिंह, सब इंस्पेक्टर राजिंदर सिंह, अन्य ब्र.कु. बहनें व सभी जवान।

अम्बिकापुर-चौपड़ापारा(छ.ग.)। मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत स्वैच्छिक संगठनों एवं जिला पंचायत की बैठक में आम नागरिकों को ज़्यादा से ज़्यादा अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए कैसे प्रेरित करें उसके लिए चर्चा की। उसके पश्चात् मतदाता जागरूकता के लिए शपथ ली गई।

पटना-बिहार। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू जी से मुलाकात कर उन्हें राज्य का स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए पटना कंकड़बाग सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. किरण बहन,आरा, ब्र.कु. अनुपमा बहन,नालंदा, ब्र.कु. रमेंद्र, ब्र.कु. सत्येंद्र, ब्र.कु. प्रमोद एवं ब्र.कु. वेदप्रकाश।

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

अपनी इच्छा शक्ति से कोई भी मतलब कोई भी संस्कार बदल सकते

अतीत का जीवन जैसी कोई अवधारणा है ही नहीं। मैं आत्मा हूँ, ऊर्जा हूँ, मैंने ये शरीर लिया, कर्म किया। एक दिन ये शरीर खराब हो गया मैंने शरीर बदल लिया। ये तो हम अपनी भाषा में उसको अतीत का जीवन, पहले की ज़िंदगी कहते हैं लेकिन आत्मा के लिए ये कुछ नहीं है। जैसे ही आत्मा के जाने का समय आता है कोई न कोई परिस्थिति आ जाती है। आत्मा चली जाती है अपने आप। सबकुछ पीछे छोड़कर जाती है। जिसके लिए हम सारा दिन मेहनत कर रहे हैं। एक क्षण आने वाला है, जिस दिन आत्मा शरीर छोड़ देती है। सबकुछ मतलब पढ़ाई भी पीछे, फिर से नर्सरी में जाना पड़ता है। वापस फिर से इतनी मेहनत करके सीखना पड़ता है सारा कुछ लेकिन बच्चे के संस्कार शुरू हो जाते हैं पहले वाले। एक सेकंड में शरीर छूटता है और सारी पढ़ाई डिलीट। लेकिन संस्कार वैसे के वैसे होते हैं।

तो फिर इस जीवन में अगर हमें ये सच्चाई पता हो कि ये सबकुछ जो हमारे पास है बहुत महत्त्वपूर्ण है लेकिन यह एक निश्चित समय के लिए है। उस तयशुदा समय के बाद जो मेरे साथ जाएगा, वो सिर्फ मेरे संस्कार हैं, बाकी सबकुछ पीछे छूट जाएगा। एक ही चीज़ है जो स्थाई है, बाकी सब अस्थाई... सब शॉर्ट टर्म के लिए है। अब एक चीज़ सोचिए, आज अगर सारा दिन आपने किसी के लिए गलत प्रतिक्रिया की, किसी के लिए गलत सोच लिया, किसी की निंदा की, किसी के बारे में दूसरे को भी सुना दिया। जब ये आत्मा शरीर छोड़ेगी, तो ज़रा चेक करिए कि क्या रह जाएगा और क्या साथ में जाएगा। जिनकी हमने निंदा की, वो भी पीछे रह जाएंगे। वो संस्कार जीवन की किसी भी उम्र में सक्रिय हो जाएंगे।

जब आत्मा गर्भ में है तो कितना ध्यान रखना चाहिए कि क्या रिकॉर्डिंग हो रही है। और हम अपना सामान्य जीवन जी रहे होते हैं और बच्चे के ऊपर रिकॉर्डिंग हो रही होती है। हम बैठकर बातें कर रहे होते हैं कि मुझे बेटी चाहिए, मुझे बेटा चाहिए। अंदर जो बैठा है वो सुन रहा है कि इनको मैं नहीं चाहिए। वो उस बच्चे के मन में रिकॉर्ड हो जाता है। जीवनभर वो महसूस करता रहता है कि लोग मुझसे प्यार नहीं करते। मेरे मम्मी-पापा मुझे नहीं चाहते। वो मम्मी-पापा पूरा जीवन उसको समझाते रहते हैं- नहीं हम तुमसे ज़्यादा और किसी से प्यार नहीं करते। लेकिन वो गर्भ में उसके ऊपर जो रिकॉर्डिंग हो गई, मुझे ये नहीं मुझे वो चाहिए। कितनी ज़िम्मेवारी बनती है हम सबकी!

वो मम्मी-पापा पूरा जीवन उसको समझाते रहते हैं- नहीं हम तुमसे ज़्यादा और किसी से प्यार नहीं करते। लेकिन वो गर्भ में उसके ऊपर जो रिकॉर्डिंग हो गई, मुझे ये नहीं मुझे वो चाहिए। कितनी ज़िम्मेवारी बनती है हम सबकी!

दूसरा फोल्डर है- माता-पिता के संस्कार, परिवार के संस्कार। ये सब अच्छी तरह से चेक कर लेना, क्योंकि इसके बाद आप अपने आस-पास के लोगों को देखेंगे तो आपका मन कभी नहीं कहेगा ये ऐसे क्यों हैं। ये ऐसे कैसे हो सकते हैं, क्योंकि उनके सारे फोल्डर पता होने चाहिए। एक फोल्डर तो वो अतीत से लेकर आए हैं। दूसरा फोल्डर उनको उनके परिवार से मिला है। उसमें से भी बहुत सारे संस्कार जब वो गर्भ में थे, तब रिकॉर्ड हो गए।

तीसरा फोल्डर माहौल, वातावरण संग। फिर हम किस शहर में रह रहे थे, किस स्कूल में जा रहे थे, किस मोहल्ले में रह रहे थे, फिर कौन मेरे दोस्त थे। आजकल तो एक और माहौल है फोन, टीवी का संग है। वो भी तो संग है ना। संग का रंग लगता है। उससे भी संस्कार बनते हैं। मीडिया से बहुत सारे संस्कार बनते हैं। मीडिया से भाषा बनती है हमारी, जो हम सुन रहे हैं, पढ़ रहे हैं। संग का रंग तीसरा फोल्डर।

चौथा फोल्डर बहुत महत्त्वपूर्ण फोल्डर है। हम अपने अतीत से कोई भी संस्कार लाए हैं। परिवार से कोई भी संस्कार मिला हो। संग के रंग से आपका कोई भी संस्कार बना हो, क्या हम उस संस्कार को बदल सकते हैं? कई लोग कहते हैं मेरा डीएनए ही डिफेक्ट है, मैं पैदा ही ऐसे हुआ था। ये कहने से क्या होता है? हम सिर्फ कह रहे हैं मुझे बदलाव नहीं करना है बस।

सवाल है कि क्या हम कोई भी संस्कार बदल सकते हैं। जवाब है, हां। जो चौथा फोल्डर है, वो है विल पॉवर यानी इच्छा शक्ति का फोल्डर। मतलब इस तीन में से कोई भी संस्कार लाए हों, हम अपनी इच्छा शक्ति से कोई भी मतलब कोई भी संस्कार बदल सकते हैं। अपने भी और दूसरों के भी।

वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। वडोदरा स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेन्टर,माउण्ट आबू की ब्रांच में डायलिसिस सेन्टर का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए मेयर श्रीमति पिंकी सोनी। साथ हैं बीजेपी प्रमुख डॉ. विजय शाह, राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिड्ढा, ब्र.कु. डॉ. बनारसी शाह, डॉ. निरंजना बहन, ब्र.कु. अरुणा बहन, डॉ. चेतन पटेल तथा अन्य।

रीवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का पूजन एवं अवलोकन करते हुए मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री जनसंपर्क एवं लोक स्वास्थ्य यंत्रकी राजेंद्र शुक्ला तथा रीवा महाराजा पुष्पराज सिंह जू देव। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी तथा अन्य।

जूनागढ़-गुज.। नवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित त्रिदिवसीय चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन मेयर श्रीमती गीताबेन परमार, मोहनभाई परमार, ब्रह्माकुमारीज़ गुजरात ज़ोन एडिशनल इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. दमयंती दीदी, ब्र.कु. बीना दीदी व अन्य गणमान्य लोगों ने किया तथा सभी ने मिलकर देवियों की महाआरती की।

नासिक-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु प्रसाद,म्हसरुल सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में संस्थान की जिला मुख्य संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. वासंती दीदी, पूर्व विधायक डॉ. श्रीमती सुधीर तांबे, संगमनेर की अध्यक्षा दुर्गाताई तांबे, कर्म योगी सन्यासी स्वामी श्रीकांतानंदजी महाराज, मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. संजीव सोनवणे, जिला सर्जन डॉ. अशोक थोरात, पूर्व महापौर रंजना भांसी, त्र्यंबकेश्वर नगरसेवक कैलाश चतुर्थ, सम आपला आवाज़ के संपादक अमोल सोनवणे, इंदिरानगर सेवाकेन्द्र से राजयोगिनी ब्र.कु. वीना दीदी, नासिक रोड सेवाकेन्द्र से राजयोगिनी ब्र.कु. पारु दीदी, गंगापुर रोड सेवाकेन्द्र से राजयोगिनी ब्र.कु. मनीषा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम दीदी, महाराष्ट्र राज्य विकलांग कर्म/शासकीय संघ के संभागीय अध्यक्ष बालासाहेब सोनवणे सर सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

जबलपुर-भंवरताल(म.प्र.)। नवरात्रि के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ शिव स्मृति भवन सेवाकेन्द्र में आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए ब्र.कु. भावना बहन।

इंदौर-प्रेमनगर(म.प्र.)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा विजयादशमी के उपलक्ष्य में कर्बला मैदान,इंदौर में आयोजित पथ संचलन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किये जाने पर ब्रह्माकुमारीज़ के इंदौर पश्चिम क्षेत्र प्रभारी ब्र.कु. शशि दीदी ने शुभारंभ एवं शस्त्र पूजन के पश्चात् समाजसेवी नरेश फुन्दवानी एवं एडवोकेट राजेश माली को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट कर ईश्वरीय संदेश दिया।

परमात्म ऊर्जा

सारे ज्ञान का सार 6 शब्दों में बुद्धि में आने से सारा ज्ञान रिवाइज़ हो जाता है। तो नशा कम होने कारण निशाना ऊपर-नीचे हो जाता है। अभी-अभी फुल फोर्स में नशा रहता, अभी-अभी मध्यम हो जाता है। नीचे की स्टेज तो खत्म हो गई ना। नीचे की स्टेज क्या होती है, उसकी अविद्या होनी चाहिए। बाकी श्रेष्ठ और मध्यम की स्टेज। मध्य की स्टेज में आने के कारण रिज़ल्ट व निशाना भी मध्यम ही रहेगा। वर्तमान समय अपनी स्मृति की स्टेज में, सर्विस की स्टेज- दोनों में अगर देखो तो रिज़ल्ट मध्यम दिखाई देती। मैजारिटी कहते हैं- जितना होना चाहिए उतना नहीं है। उस मध्यम रिज़ल्ट का मुख्य कारण यह है कि मध्यकाल के संस्कारों को अभी तक पूरी रीति भस्म नहीं किया है। तो यह मध्यकाल के संस्कार अर्थात् द्वापर काल से लेकर जो देह-अभिमान व कमज़ोरी के संस्कार भरते गये हैं उनके वश होने कारण मध्यम रिज़ल्ट दिखाई देती है।

कम्पलेन भी यही करते हैं कि चाहते नहीं हैं लेकिन संस्कार बहुत काल के होने कारण फिर हो जाता। तो इन मध्यकाल के संस्कारों को पूरी रीति भस्म नहीं किया है। डॉक्टर लोग भी बीमारी के जर्मस(कीटाणु) को पूरी रीति खत्म करने की कोशिश करते हैं। अगर एक अंश भी रह जाता है तो अंश से वंश पैदा हो जाता। तो इसी प्रकार मध्यकाल के संस्कार अंश रूप में भी होने कारण आज अंश है, कल वंश हो जाता है। इसी के वशीभूत होने कारण जो श्रेष्ठ रिज़ल्ट निकलनी चाहिए वह नहीं निकलती। कोई से भी पूछो कि आप अपने आप से सन्तुष्ट, अपने पुरुषार्थ से, अपनी सर्विस से व अपने ब्राह्मण परिवार के सम्पर्क से सन्तुष्ट हो, तो सोचते हैं। भले हाँ करते भी हैं लेकिन सोच कर करते हैं, फलक से नहीं करते। अपने पुरुषार्थ में, सर्विस में और सम्पर्क में- तीनों में ही सर्व आत्माओं के द्वारा सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट मिलना चाहिए। सर्टिफिकेट कोई कागज पर लिखत नहीं मिलेगा लेकिन हरेक द्वारा अनुभव होगा। ऐसे सर्व आत्माओं के सम्पर्क में अपने को सन्तुष्ट रखना व सर्व को सन्तुष्ट करना इसी में ही जो विजयी बनते हैं वही अष्ट देवता विजयी रत्न बनते हैं।

दो बातों में ठीक हो जाते, बाकी जो यह तीसरी बात है उसमें यथा शक्ति और नम्बरवार हैं। हैं तो सभी बातों में नम्बरवार लेकिन इस बात में ज़्यादा हैं। अगर तीनों में संतुष्ट नहीं तो श्रेष्ठ व अष्ट रत्नों में नहीं आ सकते। 'पास विद ऑनर' बनने के लिए सर्व द्वारा सन्तुष्टता का पासपोर्ट मिलना चाहिए। सम्पर्क की बात में कमी पड़ जाती है।

सम्पर्क में सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने की बात में पास होने के लिए कौन-सी मुख्य बात होनी चाहिए? अनुभव के आधार से देखो, सम्पर्क में असंतुष्ट क्यों होते हैं? सर्व को सन्तुष्ट करने के लिए व अपने सम्पर्क को सन्तुष्ट करने के लिए व अपने सम्पर्क को श्रेष्ठ बनाने के लिए मुख्य बात अपने में सहन करने की व समाने की शक्ति होनी चाहिए।

कथा सरिता

सकारात्मक सोच की शक्ति

एक बार की बात है एक बहुत ही दयावान आदमी था। वह हर रोज़ सुबह घर से काम के लिए निकलते हुए कुछ लोगों की मदद करता था, जैसे सबसे पहले वह एक घर की बालकनी से गिरते हुए पानी को व्यर्थ होने से बचाने के लिए वहाँ एक छोटे से पौधे वाला गमला रख देता है। जिससे पानी उस पौधे पर गिरे। इसके बाद वह थोड़ा और आगे जाता है वहाँ एक आदमी का ठेला एक गड्ढे में फंस जाता है, उसकी मदद के लिए कोई आगे नहीं आता तब वह आदमी उसकी मदद करता है। इसके बाद थोड़ा और आगे चलने पर एक बहुत ही गरीब लड़की जो पढ़ना चाहती है, वहाँ फुटपाथ पर बैठकर भीख मांगती है ताकि कुछ पैसे इकट्ठे हो सकें और वह पढ़ाई कर सके। वह आदमी उसे रोज़ कुछ पैसे देता है।

इस तरह वह रोज़ कुछ लोगों की मदद करता है, ऐसा वह हर रोज़ करता है। एक दूसरा आदमी उस आदमी को यह सारे काम हर रोज़ करते देखता है।

एक दिन उस दूसरे आदमी ने उस आदमी से पूछा कि - “भाई साहब आप रोज़ इन लोगों की मदद करते हैं लेकिन इससे क्या फर्क पड़ेगा? इससे केवल समय की बर्बादी होगी”। तब वह आदमी उस दूसरे आदमी से कहता है कि - “इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, इससे आपको भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा और इससे इस दुनिया में भी किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा किन्तु जो मैं करता हूँ वह मेरा फर्ज़ है, मैं सिर्फ अपना फर्ज़ निभा रहा हूँ और फर्ज़ निभाने में समय की बर्बादी नहीं होती। ऐसा कह कर वह वहाँ से चला जाता है। ऐसा करते-करते कुछ दिन बीत जाते हैं और फिर एक दिन वह देखता है कि वह बालकनी के नीचे रखा हुआ पौधा बड़ा हो गया है। फिर थोड़ा आगे जाकर वह हर रोज़ की तरह उस ठेले वाले आदमी की मदद के लिए जाता है तो देखता है कुछ और लोग उसकी मदद कर रहे हैं। फिर थोड़ा और आगे उस लड़की को पैसे देने के लिए जाता है तो देखता है कि वह लड़की वहाँ नहीं है, वह उसका वहीं इंतज़ार करता है, थोड़ी देर बाद वह लड़की एक स्कूल की यूनिफार्म पहनकर उसके सामने आती है।

यह सब देखकर वह बहुत खुश होता है लेकिन वह दूसरा आदमी भी यह सब देख रहा होता है, और यह सब देख कर उसे समझ आता है कि एक आदमी ने कोशिश की तो किसी का कितना भला हो गया इसी तरह यदि और लोग भी ऐसा करने लगें तो इस देश की पूरी सूरत ही बदल सकती है।

शिक्षा : इस कहानी से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें नकारात्मक न सोच सकारात्मक सोचना चाहिए। व्यर्थ ही पैसे खर्च करने से अच्छा है कि किसी ज़रूरतमंद की मदद करें, क्योंकि इससे आपको खुशी मिलेगी और किसी को नया जीवन मिल जायेगा।

न्यायसंगत निर्णय

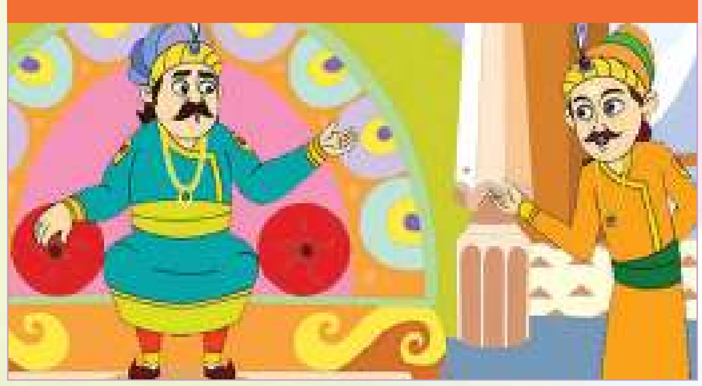

अवध देश के एक राजा थे जो बहुत दयालु एवं न्यायप्रिय थे। जिसकी ख्याति अन्य राज्यों में भी फैली हुई थी। उनके न्याय के लिए सभी उनकी प्रशंसा करते थे। प्रजा को भी अपने राजा पर नाज़ था। न्यायसंगत राजा होता है तो प्रजा में खुशहाली होती है और प्रजा भी सद्मार्ग पर ही रहती है।

एक दिन की घटना थी, राजा के पुत्र ने एक गंभीर अपराध किया जिसपर प्रजा में बात होने लगी कि अब राजा क्या निर्णय लेंगे। लेकिन राजा ने अपने पुत्र को गंभीर अपराध की कड़ी सजा दी। पर इसके बाद भी राजा के लिए अपशब्द सुनाई देने लगे। प्रजा में काना-फूसी शुरू हो गई, यह देख राजा अत्यंत दुःखी थे।

एक दिन उन्होंने अपने विद्वान मंत्री से इस विषय पर बात की, कि हे महामंत्री! हमने तो न्यायसंगत ही निर्णय लिया पर इस अपयश का क्या कारण हो सकता है?

मंत्री ने सरलता से उत्तर दिया - हे महाराज जब आसमान में बदली छाती है तो एक छोटा-सा बादल भी सूर्य के तेज को कम कर देता है लेकिन बादल छटते ही सूर्य अपने तेज के साथ पुनः निकलता है। उससे उसकी ख्याति में कोई प्रभाव नहीं पड़ता। आपके बेटे से बड़ा अपराध हुआ है लेकिन आपका निर्णय न्यायसंगत है इसलिए आपके यश में इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह सुनकर राजा को संतुष्टि का अनुभव हुआ और वे अपने कार्यों में लग गए।

शिक्षा : जब इंसान धर्म के मार्ग पर न्याय संगत निर्णय लेता है तो उसे डरना नहीं चाहिए। और न ही किसी तरह के अपयश की चिंता में पड़ना चाहिए।

उमरेड-महा.। नवरात्रि के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ के पावनधाम सेवाकेन्द्र के विश्वकल्याणी हॉल में आयोजित पाँच दिवसीय चैतन्य नव दुर्गा दर्शन झाँकी के उद्घाटन में राजयोगिनी ब्र.कु. रेखा दीदी,संचालिका,स्थानीय सेवाकेन्द्र, डॉ. जगदीश तलमले,संचालक आर्च एंजल हॉस्पिटल उमरेड, डॉ. झुरमुरे, श्रीमती डॉ. झुरमुरे संचालक झुरमुरे हॉस्पिटल, डॉ. भिवापूरकर संचालक भिवापूरकर हॉस्पिटल, अनिल गोविंदानी सामाजिक कार्यकर्ता, श्रीमती संगीत मिश्रा पतंजली योग शिक्षिका तथा राजयोगी ब्र.कु. अशोक भाई आदि शामिल रहे।

पोरबंदर-गुज.। नवरात्रि के अवसर पर अलौकिक चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में जिला पुलिस अधीक्षक एस.पी. भागीरथ सिंह जडेजा, द युवा पोरबंदर डिस्ट्रिक्ट चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़ के प्रेसिडेंट आकाश भाई लाखानी, ब्र.कु. गीता दीदी तथा अन्य।

अलीराजपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के महात्मा गांधी मार्ग स्थित सेवाकेन्द्र में आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. माधुरी बहन। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ धार्मिक प्रभाग इंदौर के ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. नारायण भाई। कार्यक्रम में महेंद्र रोधले,शासकीय अध्यापक, डॉ. कन्हैयालाल, एडिशनल कलेक्टर की धर्मपत्नी श्रीमती वंदना अग्रवाल आदि गणमान्य लोगों ने अपने अनुभव साझा किये।

बाबा का एहसान नहीं चुका सकता...!!!

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जब भी मैं बाबा के सामने जाता हूँ तो मेरा हाथ ऐसा होता है(सिर झुकाकर प्रणाम करने का)। क्योंकि उन्होंने मुझ पर बहुत एहसान किया है, उपकार किया है, कल्याण किया है। बाबा कहते हैं कि मैं बाप भी हूँ, शिक्षक भी हूँ और सद्‌गुरु भी हूँ। ये तीनों रूप मुझे साथ-साथ दिखायी देते हैं। इसलिए अनजाने में भी बाबा के सामने मेरे हाथ जुड़ जाते हैं, जैसे नमस्कार है सद्‌गुरु को। मैं उनका कृतज्ञ हूँ, उन्होंने सदा मेरा साथ दिया है, संरक्षण किया है। बहुत विनम्र भाव से मैं उनके प्रति खड़ा होता हूँ। वे कहाँ, मैं कहाँ! ठीक है, मैं उनका बच्चा हूँ। जो राजा का बच्चा हो, उसका अपना स्थान होता है लेकिन यहाँ बात कुछ और है। शिव बाबा, जिसको सारी दुनिया याद करती है और मैं एक छोटा-सा व्यक्ति जो आवारागर्द था। उसको उन्होंने क्या बनाया, क्या सिखाया! उनकी कमाल है। मेरे मन का उद्‌गार उस रूप में प्रकट होता है। जब बाबा को देखता हूँ, बाबा के पास भी मेरा वो भाव पहुंचता है और उनका भी मेरे प्रति पहुंचता है। मेरे से कोई भी भूल हुई हो, चूक हुई हो, क्षमा कीजिए। आप अत्यन्त महान हैं। मैंने अज्ञानतावश आपकी कोई बात नहीं मानी होगी, नाफरमानबरदारी की होगी, जैसे आप कहते हैं कि जैसे शिष्य को गुरु की बात माननी चाहिए, अगर मैं नहीं मान पाया हूँगा, अपनी असमर्थता से, आलस्य से, कोई और कारण से हो सकता है, मुझे क्षमा कीजिए।

मुझे यह भी मालूम है कि बाबा क्षमा नहीं करते लेकिन मेरा भाव यह होता है कि मुझे क्षमा कीजिए। गीता में भी आपने पढ़ा होगा। पहले संवाद है अर्जुन का और भगवान का। वह जो संवाद है उसमें अर्जुन प्रश्न भी करता है, बातें भी करता है और संशय भी प्रकट करता है। समझता है कि यह मेरा सम्बन्धी है। उस भाव से बात करता रहता है। बाद में जब उसको दिव्य दृष्टि मिलती है, साक्षात्कार करता है कि यह कौन है मेरे सामने! लाइट ही लाइट! एक जबरदस्त लाइट और माइट। तब वह कहता है, 'नमस्करु', मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप मेरे श्रद्धेय हैं, आप मेरे पूज्यनीय हैं।

मैं यह कह रहा था कि जिस प्रसंग में, बाबा, मैंने अपनी अज्ञानता में कुछ भी कहा होगा, उसको क्षमा कर दीजिये। अब मैं समझा कि आप कौन हैं। साकार बाबा के सामने भी जब मैं जाता था तब भी मेरे मन में यही भाव होता था। कमाल है, बाबा ने मेरे लिए क्या नहीं किया! मैं आपसे सच बताता हूँ। मैं कुछ भी नहीं था। कुछ काम का नहीं था। उन्होंने मेरे लिए क्या नहीं किया! मुझे क्या से क्या बनाया! जो भी बनाया मुझे, उन्होंने ही बनाया। लोग समझते हैं कि इसने यह किया, वह किया। करनकरावनहार तो बाबा है। मैंने कुछ भी नहीं किया। अगर मैंने किया हो, वो बाबा की टचिंग से किया लेकिन टचिंग तो उनकी थी। काम करवाया उन्होंने। मैं सच बताता हूँ आपको, मैंने कुछ नहीं किया। बड़े-बड़े जनसमूह का, शहर के शहर का मैंने सामना

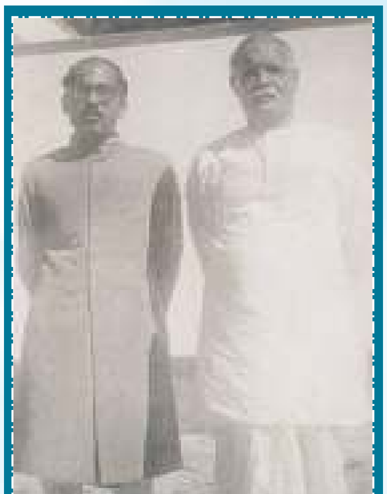

आप कौन हैं। साकार बाबा के सामने भी जब मैं जाता था तब भी मेरे मन में यही भाव होता था। कमाल है, बाबा ने मेरे लिए क्या नहीं किया! मैं आपसे सच बताता हूँ। मैं कुछ भी नहीं था। कुछ काम का नहीं था। उन्होंने मेरे लिए क्या नहीं किया!

किया, हमारी संस्था के विरोध में, तलवार लिए हुए, मारने को तैयार! ऐसे कई किस्से हुए हैं। सामने तो मैं था लेकिन मेरे साथ कौन था? मुझे बचाया किसने? अगर मैंने कोई तरीका भी अपनाया, वह टचिंग किसकी थी? वह उनकी थी। यह मैं ऊपर-ऊपर से नहीं कह रहा हूँ, अनुभव से कह रहा हूँ। ये अनुभव ऐसा हल्का-सल्का नहीं, गहरा, बिल्कुल स्पष्ट। यह सब उसका है। इसलिए यह भाव, यह कृतज्ञता मेरे से निकलती है जब मैं बाबा के सामने जाता हूँ।

मैं जब भी बाबा को देखता हूँ, मुझे बहुत-बहुत घनिष्ठता महसूस होती है। उनका मुझसे इतना गहरा प्यार है जिसका कोई वर्णन नहीं। मेरा भी उनसे गहरा प्यार है जो मैं उसका वर्णन कर नहीं सकता। जब बाबा के सामने खड़ा होता हूँ, यह मुझे अनुभव होता है। बाबा तो देखते हरेक को हैं, देखने का भाव हरेक को अलग-अलग पहुंचता है। शुरु से लेकर वे मुझे जिस ढंग से देखते थे आज भी उसी ढंग से देख रहे हैं। पहले जितना प्यार उन्होंने साकार में दिया है, आज भी उतना ही प्यार दे रहे हैं साकार में बाबा अमृतवेले दो बजे उठ जाते थे। मैं भी दो बजे उठ जाता था और लाइट जला देता था। मेरे कमरे में लाइट जली हुई बाबा देखते थे या और कोई देखकर बता देते तो बाबा पहरे वालों से कहते थे, लाइट जल रही है, अगर जगदीश बच्चा उठा है तो उसको बुला लो। उस समय बाबा को कोई ज्ञान की बिन्दु आती थी या कोई सेवा की प्रेरणा होती थी तो बाबा के सामने कोई न कोई चाहिए जिसको बताये। अगर कोई न होता तो बाबा नोट कर लेते थे। एक-दो बार मुझे ऐसे बाबा का बुलावा आया। पहरे वाले ने कहा, बाबा आपको याद फरमा रहे हैं। मैं चला जाता था। फिर हमेशा यह कोशिश की कि मैं भी दो-अढ़ाई बजे नहाकर तैयार रहूँ। बाबा के पास जाऊं और नहाया हुआ न हूँ, यह नहीं होना चाहिए। हमेशा मैं नयी दुल्हन की तरह तैयार होकर बाबा के पास जाता था। बाबा मुझे बुलाते थे। क्या बात करते थे, बात मत पूछिये। बाबा कभी कटोरी में या कप में दूध पी रहे होते। मुझे भी पिला देते थे। कभी कुछ, कभी कुछ खिलाते या पिलाते थे। छोटे बच्चे को जैसे उसका दादा या बाबा प्यार करता है, वैसे मुझे अपने पास बिठाकर सुबह-सुबह प्यार देते थे। सारा विश्व सुबह-सुबह भगवान को याद कर रहा है लेकिन भगवान सुबह-सुबह मुझे याद कर रहा है और कहता है जगदीश बच्चे को बुला लो, कभी भी बाबा ने मुझे डांटा नहीं। ऐसे भी नहीं कहा कि जगदीश को बुला लो। बाबा हमेशा कहते रहे, बच्चे से कहो, 'बाबा याद फरमा रहे हैं'। कभी बाबा ने मुझे यह नहीं कहा कि यह काम करो, वह काम करो। बाबा कहते थे, बच्चे, यह काम करोगे? हमेशा बाबा मुझे ऐसे ही कहते थे। आश्चर्य की बात है, इतने छोटे से, अंकिचन(नाचीज़) व्यक्ति को बाबा का आदर देखिये! इससे लगता है कि उनमें कितनी महानता है! देखिये, इतनी बड़ी हस्ती मुझ से कहते थे, बच्चे, यह करोगे? जब ऐसे व्यक्ति आपसे कहेंगे तो आप करना क्या, जान भी दे देंगे। सारी दुनिया एक तरफ, कितने भी विघ्न आयें, अगर आपका ऐसा हुकम है, आदेश है तो अवश्य करेंगे। कुछ भी हो जाये, हम करेंगे। हमेशा मेरा और बाबा का इस प्रकार का सम्बन्ध रहा।

छतरपुर-म.प्र.। दीपावली पर्व पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में बनाई श्री लक्ष्मी की चैतन्य झांकी के साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. शैलजा दीदी, विश्वनाथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा दीदी, ब्र.कु. माधुरी बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

इंदौर-सुखदेव नगर(म.प्र.)। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए भाजपा राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व कैबिनेट मिनिस्टर कैलाश विजयवर्गीय, उद्योगपति नारायण अग्रवाल, एक्स एयर इंडिया सिक्योरिटी इंचार्ज आनंद कुमार शर्मा, कालानी नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जयंती दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुजाता दीदी तथा अन्य।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। राजयोगी ब्र.कु. भाई-बहनों के लिए 'व्यक्त से अव्यक्त' विषय पर आयोजित योग भट्ठी कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं गांधीनगर गुजरात से आई राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी, ब्र.कु. विमला दीदी, ब्र.कु. मेघा बहन, ब्र.कु. राजू भाई व अन्य।

इंदौर-ज्ञानशिखर(म.प्र.)। बच्चों और उनके पेरेंट्स के लिए 'सफलता का मंत्र' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सभी को व्यसन मुक्ति की शपथ दिलाते हुए मेडिकल विंग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. उषा बहन। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, इंटरनेशनल मेमोरी ट्रेनर डॉ. अदिति सिंघल, ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. छाया बहन तथा डॉ. शिल्पा देसाई।

सिवनी-शांति शिखर(म.प्र.)। करवा चौथ के अवसर पर शहर की सभी महिलाओं को आमंत्रित कर ब्र.कु. गीता दीदी ने करवा चौथ व्रत के आध्यात्मिक अर्थ को समझाया। ब्र.कु. ज्योति बहन ने सभी को तिलक कर ईश्वरीय प्रसाद प्रदान किया।

नांदेड़-महा.। पोखरणी कृषि विज्ञान केंद्र नांदेड़ द्वारा आयोजित सेंद्रिय कृषि अभ्यासवर्ग प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'शाश्वत यौगिक खेती और अध्यात्म की आवश्यकता' विषय पर मार्गदर्शन करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ पूर्णा परभणी सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. प्रणिता दीदी। इस अवसर पर माधव देशमुख, मोरे सर तथा अन्य सभी जैविक खेती करने वाले किसान भाई मौजूद रहे।

गांधीधाम-भारत नगर(गुज.)। नवरात्रि के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा माँ आशापुरा मंदिर में नौ दुर्गा की चैतन्य झाँकी में उपस्थित हैं श्रीमती सुजाता बेन प्रधान प्रेसिडेंट वीएसएसएस वुमेन विंग, ब्र.कु. सरिता बहन, रमेश प्रधान, ब्र.कु. हैप्पी भाई तथा अन्य। 800 से अधिक लोगों ने इस झाँकी का अवलोकन कर नवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य की जानकारी प्राप्त की।

तपस्वी वही जिनके...

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

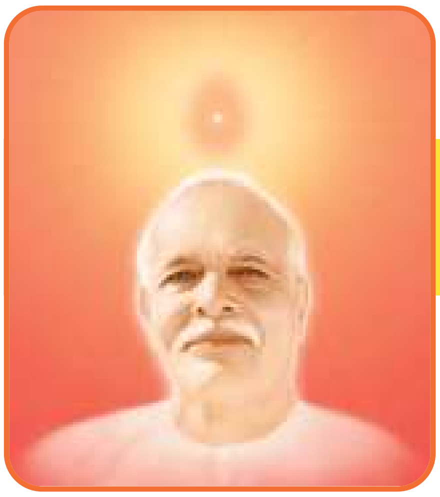

हम सभी जिस मार्ग पर हैं उसे अध्यात्म का मार्ग कहा जाता है और ये अध्यात्म का मार्ग बहुत आसान भी है और बहुत कठिन भी। इसलिए है क्योंकि जब अध्यात्म की गहरी समझ हमें मिल जाती है तो वो समझ मिलने के बाद हम सभी इस मार्ग को आसान बना सकते हैं। इसकी समझ किसी एक तपस्वी को मिली1936-37 में, जिनके आगे कोई भी ऐसा आदर्श नहीं था, कोई ऐसा मिसाल नहीं था और कोई भी इस बात को तुरंत स्वीकार करने वाला भी नहीं था, लेकिन वो अन्दर की गहरी समझ और दूसरा परमात्मा पर गहरा विश्वास। उन दोनों के बल पर उन्होंने इस मार्ग को चुना।

इसमें एक कहावत के रूप में इसको ऐसे समझ सकते हैं या समझाने के आधार से ही मैं बोल रहा हूँ कि जैसे सबकी परमात्मा के प्रति आस्था ज़रूर है लेकिन पूरी तरह से विश्वास नहीं है। ये लाइन सिर्फ लाइन नहीं है, इसको समझना बहुत ज़रूरी है। हम सभी बाबा को जानते हैं, समझते भी हैं, आस्था है ब्रह्माकुमारीज़ के लिए, शिव बाबा के लिए, इस ज्ञान के लिए लेकिन सम्पूर्ण विश्वास न होने के कारण हमको स्वीकार नहीं होता। इसका दूसरा पहलू ये भी है कि अगर स्वीकार होता तो मैं वो सारे कार्य करता जो अध्यात्म से जुड़े हुए हों। उदाहरण के लिए सब लोग ज्योतिषी का भी सहारा ले रहे हैं, वास्तु का सहारा ले रहे हैं, और-और चीज़ों का सहारा ले रहे हैं।

जितने भी त्योहार आते हैं उनको उसी हिसाब से सेलिब्रेट करते हैं, मनाते हैं। और-और जो भी टोने-टोटके, सोमवार, मंगलवार, बुधवार दिन सब चीज़ें वही करते जा रहे हैं जो भक्ति में, और-और चीज़ों में करते आये। माना मान्यताओं को तोड़ने की हिम्मत नहीं है, ताकत नहीं है। अंधविश्वास को तोड़ने की हिम्मत और ताकत नहीं है, सिर्फ आस्था है। पूरी तरह से विश्वास अगर होता परमात्मा पर तो हर दिन हमारा शुभ होता। ये नहीं कि सिर्फ एक दिन शुभ है। हर दिन हमारे लिए शुभ है। हर दिन हमारे लिए एक नया जीवन है। इसी तरह से परमात्मा के प्रति हम सबकी श्रद्धा आवश्यक है और वो है भी सत्य, लेकिन पूरी तरह से समर्पण नहीं है। तो जब तक श्रद्धा है, श्रद्धा माना कैजुअल एप्रोच, कैजुअल एप्रोच का मतलब मान लिया कि थोड़ी-सी श्रद्धा है, लेकिन समर्पण का मतलब होता है पूरी तरह से हम उसको अपने आपको नहीं दे पाते उसका रिज़न क्या है कि हम पूरी तरह से उसको नहीं मानते।

तो मात्र एक ब्रह्मा बाबा जिनको मैंने शुरू में आपके सामने उदाहरण के रूप में रखा। उनके अन्दर ये चारों चीज़ें थी- आस्था भी थी, सम्पूर्ण विश्वास भी था, श्रद्धा भी थी और समर्पण भी था। इसके आधार से बाबा पूरी तरह से उन कार्यों को करने में तत्पर रहे और अपने तपस्वी जीवन को पूरी तरह से सबके सामने रखा भी। सिर्फ एक आधार आस्था ही नहीं, विश्वास भी। श्रद्धा ही नहीं, समर्पण भी। तो श्रद्धा, समर्पण और विश्वास ये चीज़ें ऐसी हैं जो हमको परमात्मा के साथ जोड़ने में मदद करती है। और इससे हमारी सम्पूर्णता भी ज़ाहिर होती है। आगे आती है और हम आगे भी बढ़ते हैं उससे। इसका दूसरा उदाहरण आप ऐसे भी ले सकते हैं कि बाबा ने जब पालना की और जब वो तपस्या कर रहे थे तो बहुत सारी दादियां उनके साथ थीं। बहुत सारे बाबा के बच्चे उनके साथ थे लेकिन बाबा ने सबकी पालना भी वैसी की। इतना ज्ञान को भरा शरीर को भूलने के लिए कहा, शरीर से सम्बन्धित जितनी भी चीज़ें हम करते हैं उन सबको बाबा ने अनर्गल और बेकार कहा। इतना ज़्यादा भरा और यही तपस्या है। तपस्या का मतलब है जो हमारा नहीं है हमने जिसको लिया है लोन पर उसको भूलना है, सबसे बड़ी तपस्या यही है। और आज हम उसी के लिए दिन-रात सोच रहे हैं। चाहे रहने का हो, खाने का हो, सोने का हो, उसी के प्रति बहाना है। उसी का बहाना लेकर कार्य न करने का बहाना है। तो ये सारी चीज़ें हमारी तपस्या में बाधा है।

तो हमारे एक तपस्वी, सिर्फ एक तपस्वी इस धरती का, जो इतना ज़्यादा शक्तिशाली थे, जिन्होंने इन दोनों को पूरी तरह से अपने अन्दर धारण किया और बोला शरीर हमारा एक वस्त्र है, शरीर नश्वर है, शरीर का भान देह अभिमान को तोड़ना ही हमारा परमात्मा से कम्पलीट मिलने का आधार है। बाकी जितने भी कर्मकांड हैं, रिचुअल्स(रिवाज़) हैं, जो भी हम करते हैं ये थोड़ी देर के लिए हैं। तो ऐसे तपस्वी ब्रह्मा बाबा को समझने के चार आयाम हैं श्रद्धा, समर्पण, आस्था और विश्वास। इन चारों कसौटी पर हम सबको खुद को परख कर देखना है कि क्या हम ऐसे हैं? अगर ऐसे हैं तो पूरी तरह से फॉलो करके दिखाएं और अगर नहीं हैं तो हम भी लोगों के प्रति ये भी कर रहे हैं, वो भी कर रहे हैं। इससे सम्पूर्णता थोड़ी हमसे अभी दूर ही रहने वाली है। तो अगर फिर से हम उसके नज़दीक जाना चाहते हैं तो उसको नज़दीक ले आने के लिए ये कार्य करना है।

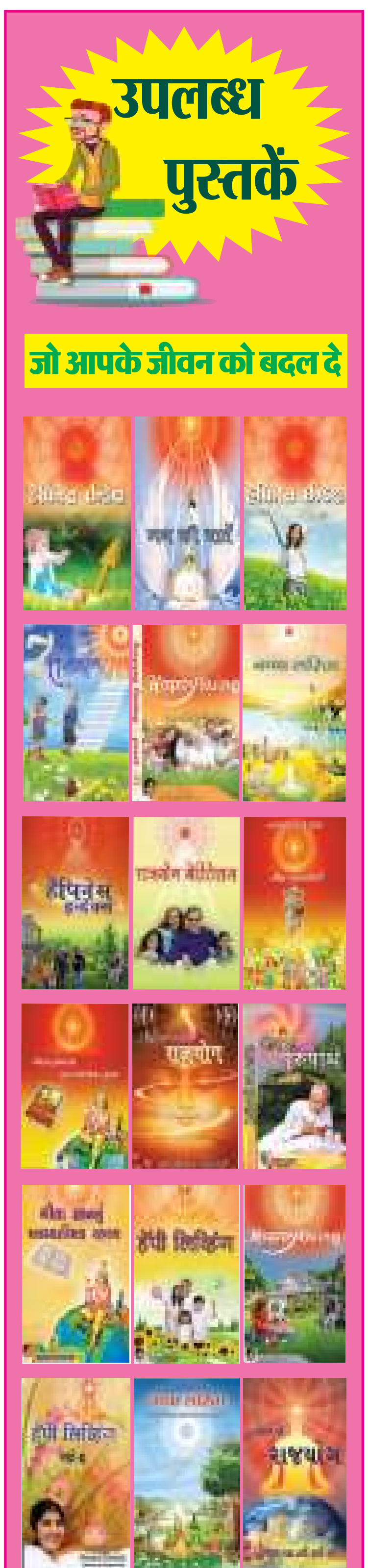

मन की बातें

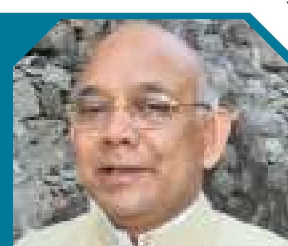

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मैं श्रीरामपुर से, भक्ति माली हूँ। भक्ति में लोग मंत्र जाप करते हैं और आप लोग राजयोग सिखाते हैं,दोनों में अन्तर क्या है?

उत्तर : मंत्र जाप भी आज कितने लोग करते हैं। मेरे से बहुत भक्त लोग मिलते हैं और मैं जब उनसे पूछता हूँ कितनी माला फेरते हो, क्या सचमुच माला पर, मंत्र पर मन लगता है? क्योंकि जब माला कुछ जप रहे हैं, मंत्र भी याद आ रहा है और मन कहीं ओर भी भाग रहा है। ऐसा भी होता है कि मंत्र को छोड़कर कुछ और ही करने लगें, कभी इधर-उधर देखने लगें। वो काम हुआ है या नहीं हुआ है। देखिए मंत्रजाप भी वास्तव में सच्चे मन से नहीं किया जा रहा है। लेकिन मंत्र जाप का महत्त्व मैं सबके सामने अवश्य रखूंगा। मंत्रों में बहुत शक्ति होती है। लेकिन मंत्र जाप का यथार्थ उच्चारण, एक तो इसका महत्त्व है। क्योंकि उससे कुछ वेव्स निकलनी चाहिए। जो वेव्स वहाँ तक पहुंचेगीं, जिनके हम उन मंत्रों का जाप कर रहे हैं। दूसरी चीज़ ये है कि शुद्ध मन से किया जाये। अगर शुद्ध मन नहीं है तो मंत्रों की शक्ति भी ज़्यादा काम नहीं करेगी। तीसरी बात, यदि मंत्रों का उच्चारण बार-बार किया जाये बहुत ही एकाग्रता के साथ तो मन पूरी तरह शांत हो जाता है। शांत मन से बहुत एनर्जी जनरेट होती है। ये इसका फायदा है। इसीलिए मंत्र शक्ति के बहुत चमत्कारिक प्रभाव प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों के द्वारा देखे गए और दिखाए गए। लेकिन आज वो शक्ति लोगों में नहीं रही क्योंकि इसके पीछे पवित्रता का बल चाहिए। तो वो तो अब लोगों में रहा नहीं।

लेकिन राजयोग, ये तो सीधा परमात्मा से मिलन है। राजयोग परमात्मा की खोज नहीं है, उससे मिलन है। और इस राजयोग की विशेषता यही है कि ये राजयोग की विद्या स्वयं भगवान योगेश्वर ही देते हैं। ये मनुष्यों के द्वारा दी ही नहीं जा सकती। क्योंकि मनुष्य को न आत्मा का सम्पूर्ण ज्ञान है और न परमात्मा का। वो परमात्मा कहते तो हैं लेकिन वो क्या हैं, कहां हैं, उसका स्वरूप क्या है, उसके गुण क्या हैं, उसके कर्त्तव्य क्या हैं। उसका बोध मनुष्यों के पास नहीं होता। हम कौन हैं, ये तो खोज ही बनी रही संसार में। हमारे दर्शनों में और हमारे जो ऋषि-मुनि रहे हैं वो भी खोज करते रहे कि आखिर तुम हो कौन! लेकिन परमात्मा आकर बहुत ही स्पष्ट ज्ञान हमें दे देते हैं। हम आत्मायें हैं, देह भान से न्यारे हो जाओ। पहली जो इम्पोंटेंट चीज़ होती है स्वयं को इस बॉडी कॉन्शियसनेस से परे करना। बॉडी कॉन्शियसनेस से जुड़े हैं समस्त विकार। तो जैसे ही हम बॉडी कॉन्शियसनेस से बिल्कुल डिटैच होने लगते हैं तो भौतिकता से भी हम थोड़े डिटैच हो जाते हैं। और संसार में हमारी जो तृष्णायें, इच्छायें, रस, दौड़-भाग कर रहे हैं, हमें बांध रहे हैं। वो छूट जाते हैं। दूसरी ओर ये मनोविकार भी ढीले पड़ने लग जाते हैं। हज़ारों-लाखों के अनुभव हैं- क्रोधी थे। बॉडीलेस का अभ्यास करने से क्रोध शांत हो गया। अब उनके जीवन में शांति है, परिवार में शांति है। और दूसरी बात परमात्मा से बुद्धियोग जोड़ना। बिना इसके योग इनकम्पलीट है। जब तक हमने उससे बुद्धियोग नहीं जोड़ा, उसके स्वरूप पर मन-बुद्धि को स्थिर नहीं किया तब तक ये राजयोग कम्पलीट नहीं होता। तो अशरीरी होकर, आत्मिक स्वरूप में आकर परमात्मा से नाता जोड़ना उसके स्वरूप पर मन-बुद्धि को स्थिर करना और उससे शक्तियां ग्रहण करना, उससे प्युअर वायब्रेशन ग्रहण करना ये राजयोग है। परमात्म मिलन का मार्ग है। इस योग के अभ्यास से तो साधक को ये महसूस होता है कि हम भगवान से मिलते हैं। जब योग किया, मिलन की अनुभूति हुई। मेरे जीवन में भी यही हुआ। 1964 में मैंने प्रथम बार योग किया था तो लगा भगवान से मिलन हो गया, और उसने मुझे आकर्षित कर लिया। तो मैं सबको यही राय दूंगा कि मंत्र जाप तो कर लिया, अच्छा किया। अब परमात्मा से मिलन का सुख अनुभव करें।

प्रश्न : आज हमारी कंट्री के अन्दर बहुत-सी बुराइयां आ गई हैं। इन सबको कैसे दूर किया जा सकता है, कृपया इस पर कुछ बतायें?

उत्तर : युवा हमारे संसार के लिए एक गौरव हैं। जो हमारे देश को एक सुन्दर स्थिति में देखना चाहते हैं। जिनको इस समय चलने वाली बुराइयों का बहुत अच्छी तरह से आभास है। चाहे वो राजनीति में हो, चाहे युवकों के बीच हो, चाहे रेप के केस हो, बहुत सारी गंदगी समाज में जो आ गई है अगर वो बढ़ती गई तो कहीं न कहीं जब किसी भी बात की अति होती है तो विनाश को निमंत्रण देती है। तो मैं आपको कहूंगा कि आप स्वयं को तैयार करें कि हम इन सभी बुराइयों को समाप्त करने का एक बहुत अच्छा योगदान करेंगे। और संकल्प कर लें कि हम ना किसी को पैसा देंगे और न किसी से लेंगे। लेकिन ये प्रश्न आता है कि इसके बिना काम नहीं चलता। चलो न लेंगे मान भी लिया जाये लेकिन न देंगे इसके लिए तो कोई और चारा होता ही नहीं। नहीं तो चार-छह मास ऑफिस में चक्कर लगाने पड़ेंगे। और भी बहुत बुराइयां हैं उसको रोकने के लिए युवक इच्छुक हैं कि हम अपने देश में एक स्वच्छता देखना चाहते हैं। पवित्रता देखना चाहते हैं तो उन्हें पवित्रता का मार्ग स्वयं अपनाना होगा। देखिए लौकिक में देखें जब कोई बीमारी बहुत भारी पड़ जाती है, आजकल कैंसर के लिए भी कीमो थैरेपी देते हैं किसी को तो वो सहन करना ही भारी हो जाता है। आयुर्वेद में तो कड़वी दवाई पिला देते हैं। तो ये भयंकर बीमारी देश में फैल गई है। इसके लिए बहुत अच्छी ये दवाई है- पवित्रता का मार्ग अपनाना। और आप एक अपना ऐसा ग्रुप बना लें सभी युवक पवित्रता का पालन करते हुए भारत को अच्छा बनाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार हों। मैं आपको ये भी स्पष्ट कर दूं कि भ्रष्टाचार को तब तक समाप्त नहीं किया जा सकता जब तक मनुष्य को श्रेष्ठाचारी न बना दिया जाये और मनुष्य को श्रेष्ठाचारी बनाने का काम स्वयं परम आत्मा का है। अब आप कहेंगे कि वो कब करेगा? करेगा या नहीं करेगा, उसपर डिपेंडेंट रहें क्या? तो वो कर रहा है। वो हर मनुष्य को देवत्व की ओर ले चल रहा है। और उसके इस कार्य से कई लाख लोग जुड़ चुके हैं।

हमारे यहाँ जो राजयोग सिखाया जाता है वो स्वयं भगवान ने सिखाया है। योगेश्वर ने सिखाया है। हम उस योग के वायब्रेशन से दूसरे के मन को अच्छी प्रेरणायें दे सकते हैं। वातावरण को पवित्र कर सकते हैं। तो ये काम भी हमारे बहुत अच्छे योगी कर रहे हैं। और इसका सुन्दर परिणाम थोड़े ही समय में हमारे सामने आने वाला है। कुछ समस्यायें ऐसी हैं जो बहुत बड़े लेवल की हैं, वहाँ तक हमारी पहुंच नहीं है, उसके लिए हमें सोचने की ज़रूरत नहीं। तो आपको मैं सजेस्ट करूंगा कि स्पिरिचुअल पॉवर अपने अन्दर बढ़ायें। हमारा अपना जीवन ही दूसरों के लिए प्रेरणादायक बन जाये। एक से दूसरा सीखेगा, दो से चार सीखेंगे और इस तरह से ये संख्या बढ़ती-बढ़ती चली जायेगी। तो स्पिरिचुअल लाइफ बनायें, अपने जीवन को एक बहुत सुन्दर दर्पण बनायें। जिसमें हर व्यक्ति अपने को देखे और अपने को परिवर्तन करने की प्रेरणा प्राप्त करे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

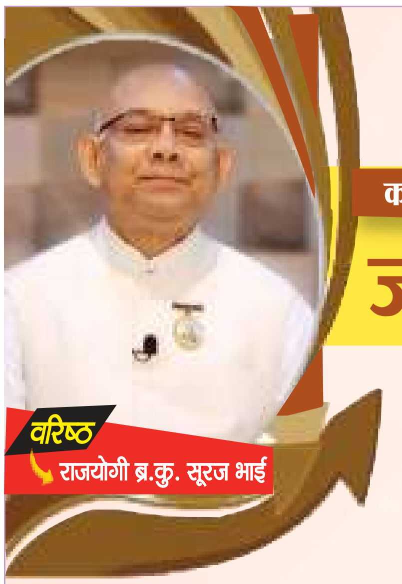

कर्मों की गुह्य गति...

जानें... पुण्य आत्मा कैसे बनें

हम चर्चा कर रहे हैं मानसिक रोगों की। और पिछले अंक में हमने गुह्य रहस्य बताये कि मानसिक रोग उनको ज़्यादा हो रहे हैं जिनका विकर्मों का खाता बहुत ज़्यादा है। क्योंकि अब ये कल्प का अन्त आ गया है। कलियुग का अंत आ गया है और सभी आत्माओं को अपना हिसाब-किताब, कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करके वापिस अपने धाम परमधाम को जाना है।

अब ये समझ लेना चाहिए करने वाले को कि कर्मों का रिटर्न अवश्य होता है। और अब समय आ गया है क्योंकि घर, अपने धाम वापिस चलना है, जहाँ से हम आये थे। तो खाते यहीं चुक्तू करने होंगे इसलिए चुक्तू करने की गति तेज़ हो गई है। लोग तो महाविनाश की बात करते ही हैं। वर्ल्ड वार की बात करते हैं। वो अभी जल्दी नहीं होगा, वो अभी होंगे और बंद होंगे। लेकिन ये कर्मों की सज़ा सबको यहीं मिलनी है। जो हिन्दू फिलॉस्फर में माना जाता है कि धर्मराज के द्वारा सज़ायें मिलती हैं। वो पार्ट प्रारम्भ हो गया है और तेज़ी से बढ़ता जायेगा।

तो बहुत लोग पास में आते हैं और बताते हैं- एक लेडी आई और बताया कि उठते ही मेरा ब्रेन बिल्कुल डल रहता है। और कई घंटे डल रहता है। मैं ऐसे पड़ी रहती हूँ जैसे डेड। एक्टिव ही नहीं होता ब्रेन! कुछ करने की इच्छा ही नहीं होती। मैंने कहा कि डिप्रेशन का भारी लक्षण आपको नज़र आ रहा है। अभी से ही ठीक कर लो।

इसको ठीक करने की विधि हम बता रहे हैं। आप सभी उसको ध्यान से सुन लेंगे और जिसको कोई भी लक्षण दिखाई देता हो, एंग्ज़ाइटी बहुत होती हो, गहरी चिंता, चाहे डर बहुत लगता हो, चाहे डिप्रेशन होता हो, चाहे मन बहुत परेशान रहता हो, चाहे रात को नींद न आती हो। कोई भी मानसिक रोग हो उसको हमें कुछ विधियों से ठीक करना है। मेडिसिन भी आप भले लेते रहें। मेडिसिन भी आपको मदद करेंगी। लेकिन स्पिरिचुअली आपको ठीक करना है और मैं राय दूंगा आपको कि ये ईश्वरीय ज्ञान ले लें और राजयोग का अभ्यास सीख लें। हालांकि हम जानते हैं कि मानसिक रोगों में मेडिटेशन बहुत कम हो पाता है। पर हम कुछ और विधि आपको सजेस्ट कर रहे हैं ताकि आप मेडिटेशन तक भी पहुंच सकें। और इन मानसिक रोगों से आप मुक्त हो सकें। इस अभ्यास से बहुत से लोग ठीक हुए हैं क्योंकि उन्होंने इसमें विश्वास रखा। इसमें विश्वास की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है। हम कोई छोटी-सी विधि बतायें और मनुष्य कहे कि इससे क्या होगा, बहुत बड़े-बड़े डॉक्टर्स से कुछ नहीं हुआ, ये तो हमने करके देख लिया। नहीं, होगा, अपने सब्कॉन्शियस माइंड की पॉवर का यूज़ करना है। और बहुत पॉज़िटिव रहना है। और जो बहुत गहरे डिप्रेशन में चले जाते हैं तो उनसे भी ये काम होता नहीं। तो इस काम के लिए उनके किसी प्रियजन को बैठना होगा ताकि इन चीज़ों पर हम विजय प्राप्त कर सकें। हमें अपना पुण्यों का खाता भी बढ़ाना होगा। पुण्य बहुत आवश्यक चीज़ है। क्योंकि अभी पाप अपनी चरम सीमा पर पहुंचा हुआ है। काम वासना सबसे बड़ा पाप है। भगवान ने कह दिया कि काम महाशत्रु है। काम, क्रोध अग्नि है जो उस आत्मा को भी जलाती है जिसको अग्नि नहीं जला सकती। तो हमें पुण्यों का खाता बढ़ाना है तो दूसरों को सुख देना, किसी की मदद कर देना, दूसरों की दुआयें लेना, ऐसे कार्य करने हैं। भगवान के कार्यों में सहयोग देना, अपने मुख से अच्छे वचन बोलना। पवित्र भोजन करना इस तरह के कार्य हमें करने होंगे।

पुण्य बहुत आवश्यक चीज़ है। क्योंकि अभी पाप अपनी चरम सीमा पर पहुंचा हुआ है। काम वासना सबसे बड़ा पाप है। भगवान ने कह दिया कि काम महाशत्रु है। काम, क्रोध अग्नि है जो उस आत्मा को भी जलाती है जिसको अग्नि नहीं जला सकती।

मैं कुछ और आपको कहना चाहता हूँ- मनुष्य जब बहुत अच्छा सोचता है, तब वो आनंद में है, वो बहुत खुश है, आपने ऐसे दिन देखे होंगे कि कहीं बच्चे का बर्थडे मनाया जा रहा है, कहीं बहुत सुन्दर फंक्शन हो रहा है। जिसमें सब आनंदित हैं। जब मन आनंदित होता है तो ब्रेन के भिन्न-भिन्न केन्द्रों से रसायन का स्राव होता है, जो मनुष्य को हेल्दी रखता है। ब्रेन के लिए भी वो टॉनिक बन जाता है। और जो लोग बहुत निगेटिव हैं- मनुष्य जो उदास रहने लगा है, जिसको चिंताओं का रोग लग गया है, जो बहुत भयभीत रहने लगा है, उसके ब्रेन के केन्द्रों से और शरीर की ग्रंथियों से भी बहुत गंदे, निगेटिव, ज़हरीले रसायन का स्राव होता है। जो हेल्थ को बिगाड़ते हैं और ब्रेन की शक्तियों को भी नष्ट करते हैं। इसलिए बहुत खुश रहना, अपने चित्त को बहुत हल्का रखना, अच्छी शांति का अनुभव करना, बात-बात पर जो ज़्यादा सोचने की, चिंता करने की, टेंशन में रहने की आदत है इसको ठीक करना ये परम आवश्यक है।

एक घटना आपको सुनाता हूँ, कोई परिवार मिलने आया था कि मेरे पापा बहुत बीमार हैं। कई बीमारी बता दीं। जो मानसिक चीज़ों से जुड़ी हुई है। मैंने कहा, आपके पापा टेंशन में बहुत रहते हैं क्या? कहते कि इतनी टेंशन है कि अगर हमने पानी नहीं पिया तो परेशान हो जाते हैं। टेंशन में आ जाते हैं कि पानी नहीं पी रहे हो, पानी क्यों नही पी रहे हो। कहा कि हम पानी पीते हैं अच्छी तरह से पीते हैं। लेकिन उनको टेंशन में रहने की आदत पड़ गई है।

तो सबसे पहले हम विधि आपके सामने रखते हुए अपने को बहुत पॉज़िटिव करेंगे और याद रखेंगे हमारा पॉज़िटिव चिंतन हमारे उज्जवल भविष्य का निर्माण करेगा। जितने पॉज़िटिव रहेंगे, जितने प्रसन्न रहेंगे और दूसरों को प्रसन्नता देंगे, खुश रहना और खुशी बांटना, अपने घर के माहौल को खुशनुमा जितना बनायेंगे मानसिक रोग आपके द्वार पर फटकेंगे नहीं। मेंटली आप बहुत हेल्दी रहेंगे।

मुम्बई-घाटकोपर। दीपावली उत्सव पर ओमकार अंध के.वी.ई.के सोसाइटी द्वारा विशेष नेत्रहीनों के लिए आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ आमंत्रित राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,अतिरिक्त निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबज़ोन, लोकसभा सांसद मनोज कोटक, विधायक पराग शाह व कई लोकोपरारक व्यक्ति की उपस्थिति में दीप प्रज्वलित कर किया गया।

भुज-कच्छ(गुज.)। गुजरात अडानी ईंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की मोटिवेशनल स्पीकर एवं जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी बहन, अडानी मेडिकल ईंस्टिट्यूट के डायरेक्टर डॉ. बाला जी पिलाई, डीन डॉ. ए.एन. घोष, ब्र.कु. रक्षा बहन, ब्र.कु. निहा बहन, ब्र.कु. बीना बहन, ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य।

पन्ना-म.प्र.। दीपावली व भाई दूज के उपलक्ष्य में आरपी मिश्र,जेलर,जिला जेल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता दीदी।

इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञानदीप भवन सेवाकेन्द्र में नवरात्रि एवं विजयादशमी पर आयोजित कार्यक्रम में मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती(मम्मा) को फूल एवं चुनरी पहनाने के पश्चात् ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. प्रतिमा बहन एवं ब्र.कु. ललिता बहन को चुनरी, माला, तिलक, मुकुट आदि से श्रृंगारित कर उनका सम्मान किया गया। साथ ही इस अवसर पर रावण दहन कर सभी ने बुराइयों को त्यागने की प्रतिज्ञा की।

पुणे-मीरा सोसायटी(महा.)। नवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी की आरती में शहर के कई गणमान्य लोग व नागरिक शामिल हुए व अपनी शुभकामनाएं दी। साथ ही बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें भी मौजूद रहे।

बैतूल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा नवरात्रि के अवसर पर आठनेर में चैतन्य नौ देवियों की झाँकी का आयोजन हुआ। जिसका तहसील के 24000 से भी अधिक लोगों ने अवलोकन किया। इस दौरान स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू बहन, सारणी से आईं ब्र.कु. सुनीता बहन व ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.)। स्वच्छता के लिए श्रमदान अभियान के तहत रेलवे स्टेशन परिसर में श्रमदान करते हुए ब्र.कु. सविता दीदी, अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें व रेलवे के कार्यकर्ता।

जबलपुर-म.प्र.। दीपावली पर्व पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ विनय सक्सेना, अभिलाष पांडेय, अभय जैन, पवन पांडेय, सारिका पांडेय, ब्र.कु. भावना बहन तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनों ने दीप प्रज्वलित कर किया।

कटनी-सिविल लाइन(म.प्र.)। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जिले के साधुराम स्कूल में आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए महापौर श्रीमती प्रीति जी, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन तथा अन्य।

पुणे-रविवार पेठ(महा.)। नवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी कार्यक्रम में विलास कानडे,एडिशनल कमिश्नर पुणे महानगरपालिका, नीलिमा लांजेवार,मुख्याध्यापिका आदर्श हाई स्कूल, इंद्रायणी चव्हाण,दूरदर्शन व पुणे आकाशवाणी उद्घोषक तथा लेखक निवेदक, वनिता कानडे,प्रशासन अधिकारी पुणे महानगरपालिका, इंजीनियर निकिता बोंद्रे,उपाध्यक्ष युवा संघटना भोई समाज, मनीषा वाघ,गीता प्रचारक, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रोहिणी बहन सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

न्याय भारतीय संविधान की आत्मा, भारत में हरेक को बचाव का अधिकार - जस्टिस जैन

ओआरसी-गुरुग्राम। न्याय भारतीय संविधान की आत्मा है। भारत में ही ऐसा सिस्टम है जहां हर व्यक्ति अपना बचाव कर सकता है। उक्त विचार दिल्ली उच्च न्यायालय के जस्टिस सुधीर जैन ने ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में न्यायविदों के लिए आयोजित तीन दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किये। 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण' विषय पर जस्टिस सुधीर ने कहा कि सही अर्थ में आध्यात्मिक वही है, जिसमें आत्मिक भाव हो। न्याय में यही भाव

> **आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व चीफ जस्टिस वी. ईश्वरैया ने कहा कि भारत एक समय सोने की चिड़िया कहलाता था। लेकिन आज नैतिक पतन के कारण देश की ऐसी हालत हो गई है। उन्होंने कहा कि विश्व के वर्तमान संकट का समाधान आध्यात्मिक सशक्तिकरण के द्वारा ही संभव है। आध्यात्मिकता से ही सच्ची शांति, खुशी और आनंद जैसे गुणों की अनुभूति होती है।**

निर्णय को सही स्वरूप प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता का प्रैक्टिकल स्वरूप हमें सच्चा मीडिएटर बनाता है। जिससे ही निर्णय सही हो सकता है। मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व जस्टिस व ब्रह्माकुमारीज़ ज्यूरिस्ट विंग के वाइस प्रेसिडेंट बी.डी. राठी ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ विश्व की एकमात्र संस्था है, जो मातृ शक्ति के द्वारा संचालित होती है। आध्यात्मिकता के माध्यम से ही विश्व भर में बढ़ रही नकारात्मकता को समाप्त किया जा सकता है। एसोचैम नेशनल काउंसिल ऑफ कॉर्पोरेट अफेयर्स,नई दिल्ली की चेयरपर्सन प्रीति मल्होत्रा ने भी कार्यक्रम के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। भारत सरकार के विधि कार्य विभाग के अति. सचिव डॉ. राजीव मणि ने कहा कि न्याय में विश्वास कायम रखने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था ज़रूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ जैसी वैश्विक संस्था इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

दीप प्रज्वलित कर ज्यूरिस्ट कॉन्फ्रेन्स का शुभारंभ करते हुए दिल्ली हाई कोर्ट के जस्टिस सुधीर जैन, मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के पूर्व जस्टिस बी.डी. राठी, आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस वी. ईश्वरैया, एसोचैम नेशनल काउंसिल ऑफ कॉर्पोरेट अफेयर्स की चेयरपर्सन प्रीति मल्होत्रा, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. पुष्पा दीदी, ब्र.कु. लता दीदी, ब्र.कु. नथमल भाई, सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील अशोक शर्मा, ऑल इंडिया बार एसोसिएशन दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. आदिशा अग्रवाल तथा अन्य।

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में न्यायविदों के लिए त्रिदिवसीय सम्मेलन

ऑल इंडिया बार एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. आदिशा अग्रवाल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। भारतीय संस्कृति के पुरातन मूल्यों को पुनः स्थापित कर रही है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अति. महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि वास्तव में न्याय की आवश्यकता तभी होती है, जब अन्याय हो। आध्यात्मिक चेतना की जागृति हमें उस समाज की ओर ले जाती है, जहां कोई भी अन्याय नहीं होता। उन्होंने कहा कि मनोविकारों का मूल कारण आत्मिक विस्मृति है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि आत्मा की आवाज़ को सुनकर कार्य करना आध्यात्मिकता है। जब हम आत्मा की सुनते हैं तो हमारे में दया, करुणा और प्रेम के भाव जगते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ ज्यूरिस्ट विंग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी ने सबको योग का गहन अनुभव कराते हुए कहा कि आंतरिक शुद्धिकरण से ही न्याय में पारदर्शिता आती है। ज्यूरिस्ट विंग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. लता दीदी, मा.आबू ने सबका आभार व्यक्त किया। ज्यूरिस्ट विंग की संयोजिका ब्र.कु. श्रद्धा बहन,मा.आबू एवं ओआरसी की ब्र.कु. येशु बहन ने मंच का संचालन किया।

सम्मेलन में...

- देश भर से 650 से भी अधिक न्यायविदों ने शिरकत की
- आध्यात्मिकता का प्रैक्टिकल स्वरूप सच्चा मीडिएटर बनाता है : जस्टिस सुधीर
- आध्यात्मिक सशक्तिकरण ही वर्तमान संकट का समाधानः जस्टिस ईश्वरैय्या
- आध्यात्मिक चेतना की जागृति होने से अन्याय नहीं होगा : ब्र.कु. बृजमोहन

जन-जन को जागरुक करने की सेवा कर रहा ये संस्थान : विक्रमादित्य सिंह

सुन्नी-शिमला(हि.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति भवन में आयोजित पंचम 'राज्यस्तरीय वार्षिक आध्यात्मिक सम्मलेन' में पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत वीरभद्र सिंह के सपुत्र विक्रमादित्य सिंह,लोक निर्माण, युवा एवं खेल राज्यमंत्री ने कहा कि किसी देश की समृद्धि, उन्नति अथवा विकास का आकलन वहां की सड़कें, बड़ी-बड़ी इमारतें अथवा बिजली-पानी की अच्छी व्यवस्था से नहीं अपितु इस बात से किया जाता है कि वहां के लोग कितने खुश, शान्त और सभ्य हैं। उन्होंने ब्रह्माकुमारी बहनों की प्रशंसा करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें गांव-गांव में जा कर लोगों को जागरुक कर रही हैं जो आज के युग की सबसे बड़ी सेवा है। ब्रह्माकुमारीज़ पंजाब ज़ोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी ने उपस्थित जनसमूह को जीवन जीने की कला और सदा खुश रहने का तरीका बताकर उमंग उत्साह से भर दिया। ब्र.कु. उत्तरा बहन ने सभी को अपना तन, मन, धन और समय सफल करने की प्रेरणा दी। फरीदकोट सर्किल की वरिष्ठ राजयोगिनी ब्र.कु. संगीता बहन ने राजयोग के अभ्यास द्वारा सबको गहन शांति का अनुभव कराया। अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू से आये वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. प्रकाश भाई ने मुख्य अतिथि को सम्मानित कर माउण्ट आबू आने का निमंत्रण दिया। सुन्नी उप सेवा केंद्र के वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. रेवा दास भाई ने ईश्वरीय सेवाओं का वार्षिक समाचार सुनाते हुए कुछ चयनित भाई-बहनों को प्रोत्साहन स्वरूप प्रतिष्ठा प्रमाण पत्र भी मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा वितरित करवाए। उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुंतला बहन ने सभी का धन्यवाद किया। संचालन फिल्लौर,पंजाब से आये वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. राकेश भाई ने किया। **सम्मेलन में शिमला ग्रामीण के मंडल अध्यक्ष गोपाल शर्मा, नगर पालिका सुन्नी के अध्यक्ष प्रदीप शर्मा तथा तहसीलदार सुन्नी ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज की तथा प्रदेश के विभिन्न स्थानों से व शिमला ग्रामीण के 118 गांव के लगभग 350 भाई-बहनों ने भी भाग लिया।**

> **ओम शांति भवन में 'राज्यस्तरीय वार्षिक आध्यात्मिक सम्मलेन' का सफल आयोजन**

समाज सेवा प्रभाग के अभियान का भव्य समापन समारोह

ब्रह्माकुमारीज़ का कार्य आज के समय में सबसे ज़्यादा उपयोगी : सांसद माला राज्य लक्ष्मी शाह

समाजसेवियों को किया गया सम्मानित

उत्तरकाशी-उत्तराखंड। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के प्रांगण में आयोजित 'मूल्य आधारित सेवा द्वारा समृद्ध समाज की पुनर्स्थापना' अभियान के समापन समारोह में मुख्य अतिथि सांसद टिहरी गढ़वाल महारानी माला राज्य लक्ष्मी शाह ने कहा कि मैं अपने को बहुत भाग्यशाली महसूस कर रही हूँ कि इस कार्यक्रम का मुझे निमंत्रण मिला। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था जो काम कर रही है, आज के समय में उसकी उपयोगिता बहुत ज़्यादा है। इसके साथ ही सांसद ने संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू में जाने की भी अपनी इच्छा प्रकट की।

ब्र.कु. प्रो. गिरीश भाई ने कहा कि समाज सेवा करने का मूल आधार दान करने में है। धन, अन्न, वस्त्र आदि दान करने के साथ सुख, शांति, शक्ति आदि गुणों का दान देने की भी ज़रूरत है। ब्रह्माकुमारीज़ की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. विजय लक्ष्मी दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के हर व्यक्ति का लक्ष्य है स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना। यहां के भाई-बहनों ने ईश्वरीय ज्ञान को धारण कर अपने जीवन को अलौकिक दिव्य और सात्विक बनाकर समाज सेवा करने का बीड़ा उठाया है। कार्यक्रम संयोजक ब्र.कु. वीरेंद्र भाई ने कहा कि भारत जो सोने की चिड़िया था, जहां पर दैवी संस्कृति थी, उसकी पुनर्स्थापना करने के उद्देश्य से इस अभियान का आयोजन हुआ था। उन्होंने जानकारी दी कि इस अभियान के तहत सशस्त्र सीमा बल सीआईएसएफ, आईटीबीपी, आर्मी, स्कूल, कॉलेज आदि स्थानों में कार्यक्रम आयोजित कर मोटिवेशनल स्पीकर एवं विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन किया गया। ब्रह्माकुमारीज़ के क्षेत्रीय निदेशक ब्र.कु. मेहरचंद भाई ने कहा कि सच्चे समाज सेवकों को भगवान की तरफ से बहुत दुआएं मिलती हैं। उन्होंने दुआओं को दुनिया का सबसे बड़ा खज़ाना बताते हुए कहा कि जीवन में हमें ऐसे कर्म नहीं करने चाहिए जिससे बद्दुआएं मिले।

> **सुरेश चौहान,विधायक गंगोत्री ने कहा कि सच्ची समाज सेवा का अनुभव ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउंट आबू में जाकर हुआ। ब्रह्माकुमारीज़ के 50,000 समर्पित भाई-बहनों ने पूरे विश्व में भारत के प्राचीन राजयोग के ज्ञान के द्वारा भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण का काम किया है।**

> **कार्यक्रम में गंगोत्री धाम के रावल हरीश सेमवाल, प्रताप सिंह पोखरियाल, पर्यावरण प्रेमी, सुधा गुप्ता,भारत विकास परिषद, माधव प्रसाद जोशी,अध्यक्ष इंडिया रेड क्रॉस सोसायटी, उमेश बहुगुणा,अध्यक्ष गंगा आरती समिति, मोहन डबराल,अध्यक्ष रोटरी क्लब, नागेंद्र थपलियाल,सुमन कला मंच, राघवेंद्र उनियाल,अनघा फाउंडेशन, अजय पुरी,अध्यक्ष चार धाम होटल एसोसिएशन को सम्मानित किया गया।**

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd Dec, 2023
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org